SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 38 | अंक : 74वाँ | संयुक्तांक (अक्टूबर, 2025-मार्च, 2026)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

भारतीय लेखापरीक्षा एव लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
पूर्वी क्षेत्र बैडमिंटन टूर्नामेंट 2025-26

प्रहरी परिवार

डॉ. संदीप रॉय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

श्री हाउतिनल्ल स्वानतक
महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)

श्री अजय कुमार झा
वरिष्ठ उपमहालेखाकार

श्री सुजय कुमार सिन्हा
उपमहालेखाकार

श्री पियूष कुमार राय
उपमहालेखाकार

श्री राकेश रौशन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री दिवाकर राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री शंकरा नंद झा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री रूपेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री संजीव कुमार नं.–4
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री रवि प्रभात
कनिष्ठ अनुवादक

श्री दिलीप कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री अर्कजा आकृति
कनिष्ठ अनुवादक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 38 | अंक : 74वाँ | संयुक्तांक (अक्टूबर, 2025-मार्च, 2026)

स्वत्वाधिकार : प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

प्रकाशन : प्रहरी

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने है। उनसे प्रहरी परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादक मंडल

प्रकाशक : राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

साज-सज्जा : निशा ग्राफिक्स, नाला रोड, पटना-800 004
मो०- 9708124620

मूल्य : राजभाषा हिंदी की निरंतर सेवा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 38	अंक : 74वाँ	संयुक्तांक (अक्टूबर, 2025-मार्च, 2026)

प्रहरी परिवार

संरक्षक

डॉ. संदीप रॉय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

परामर्शी

श्री हाउतिनल्ल स्वानतक	महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)
श्री अजय कुमार झा	वरिष्ठ उपमहालेखाकार
श्री सुजय कुमार सिन्हा	उपमहालेखाकार
श्री पियूष कुमार राय	उपमहालेखाकार
श्री राकेश रौशन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री दिवाकर राय	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री शंकरा नन्द झा	सम्पादक
श्री रूपेश कुमार सिंह	उप सम्पादक सह चित्र संयोजक
श्री राजू कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री रवि प्रभात	कनिष्ठ अनुवादक
श्री दिलीप कुमार	कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री अर्कजा आकृति	कनिष्ठ अनुवादक

इस अंक में

क्रम0 सं0	रचना	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश		डॉ. संदीप रॉय, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)	7
2.	संदेश		हाउतिनल्ल स्वानतक, महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)	8
3.	संदेश		अजय कुमार झा ,वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)	9
4.	संदेश		सुजय कुमार सिन्हा, उपमहालेखाकार	10
5.	संदेश		पीयूष कुमार राय, उपमहालेखाकार	11
6.	सम्पादक की कलम से....		शंकरा नंद झा, सहायक निदेशक (रा.भा.)	12
7.	आपका पत्र मिला			13–14
8.	हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश			15–18
9.	भारतीय हॉकी के 100 वर्षः गौरव, संघर्ष और.....	लेख	श्री योगेश कुमार	19–21
10.	हमें हिंदी पर अभिमान है	कविता	श्री योगेश कुमार मिश्र	22
11.	जीवन–साथी	कविता	श्रीमति अनामिका प्रकाश	23
12.	वर्तमान युग में निज भाषा का महत्त्व	लेख	मनोज कुमार नं.-1	24
13.	तर्पण (गया जी में ....)	कविता	श्याम दत्त मिश्रा	25–26
14.	ख़रबूज़ा और पति	कहानी	भुवन भाष्कर	27–28
15.	निशान	लेख	राजू कुमार सिंह	29–30
16.	रामायण काल से जुड़े बिहार के प्रमुख पर्यटन...	लेख	शंकरा नन्द झा	31–34
17.	ग़ज़ल	ग़ज़ल	रूपेश कुमार सिंह	35
18.	OTP लीला एवं QR कोड महिमा	लेख	सुभाष वर्मा	36–38
19.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के रूप में पदोन्नति अधिकारियों को पदोन्नति की शुभकामनाएँ			38
20.	ख्वाहिशों को मंजिल मिले	कविता	श्रीमती दिव्या नाथ	39
21.	ट्रम्प के टैरिफ ट्रैप से सबकः भारत का	लेख	दिलीप कुमार	40
22.	सपनों का टूटना	कविता	ललन कुमार सिंह	41
23.	बांका का मंदार हिलः प्रकृति की गोद में......	लेख	अर्कजा आकृति	42–44
24.	आखिरी पत्ता – ओ. हेनरी	अनुवाद	अर्कजा आकृति	45–47
25.	यथार्थ	कविता	श्री अभिषेक	48
26.	आईए भारत को सँवारें	लेख	रवि प्रभात	59–50
27.	अपना सीएजी (गीत)	गीत	कुमार शैलेन्द्र चन्द	51
28.	दीपावली की वैश्विक स्वीकार्यता	लेख	अमित कुमार	52–53
29.	सेवानिवृत्त			53
30	शोक संदेश			53
31	पिता	कविता	सौरभ रॉय	54
32.	शेयर से संबधित सामान्य जानकारी	लेख	श्री शतीश चन्द्रा	55
33.	भारतीय शहरीकरण मॉडल–एक विफलता.....	लेख	अनुप्रिया सिंह	56

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना की गृह पत्रिका 'प्रहरी' अपने गौरवशाली सफर का एक और पड़ाव पार करते हुए 74वें अंक के रूप में प्रकाशित होने जा रही है।

एक जीवंत और ऊर्जावान कार्यस्थल वही होता है जहाँ कर्मचारियों को अपने नियमित शासकीय दायित्वों के साथ–साथ अपनी रचनात्मक और बौद्धिक क्षमताओं को भी निखारने का सुअवसर मिले। 'प्रहरी' इसी दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और सराहनीय मंच है। लेखापरीक्षा और फाइलों की व्यस्तताओं के बीच, यह पत्रिका हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों के भीतर छिपे साहित्यकार, कवि और विचारक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

आज के बदलते प्रशासनिक परिवेश में ज्ञान, नवाचार और सकारात्मक सोच अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। 'प्रहरी' इन मूल्यों को प्रोत्साहित करने का कार्य करती है तथा हमारे बीच संवाद और प्रेरणा का वातावरण निर्मित करती है। यह पत्रिका हमें अपने कार्यक्षेत्र से परे भी अपनी प्रतिभा को पहचानने और विकसित करने का अवसर प्रदान करती है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह अंक सभी पाठकों की वैचारिक क्षुधा को शांत करेगा और उन्हें नव–सृजन के लिए प्रेरित करेगा।

इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

(डॉ. संदीप रॉय)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

संदेश

कार्यालय की पत्रिका "प्रहरी" के 74वें अंक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय परिवार की सृजनात्मकता, विचारशीलता तथा बौद्धिक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच है। इसके माध्यम से हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी न केवल अपने अनुभवों और विचारों को साझा करते हैं, बल्कि साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतिभा को भी अभिव्यक्त करते हैं।

वर्तमान समय में कार्य के साथ–साथ रचनात्मकता और सकारात्मक संवाद भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। "प्रहरी" इन दोनों के बीच संतुलन स्थापित करते हुए हमें प्रेरित करती है कि हम अपने अनुभवों से सीखें, नए विचारों को अपनाएँ और संगठन की प्रगति में सक्रिय योगदान दें।

मैं संपादकीय मंडल तथा इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी साथियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि "प्रहरी" का यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी सिद्ध होगा तथा भविष्य में भी यह पत्रिका निरंतर प्रगति के नए आयाम स्थापित करती रहेगी।

(हाउतिनल्ल स्वानतक)
महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) बिहार, पटना

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना की लोकप्रिय गृह पत्रिका 'प्रहरी' का 74वां अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होने जा रहा है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के विविध आयामों, प्रशासनिक अनुभव, साहित्यिक अभिरुचि, सांस्कृतिक गतिविधियों तथा सामाजिक संवेदनाओं को एक मंच पर प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

प्रशासन का सदैव यह लक्ष्य रहता है कि कार्यालय में एक ऐसा वातावरण निर्मित हो जहाँ कार्मिकों का सर्वांगीण विकास हो सके। हाल ही में हमारे कार्यालय द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित 'ईस्ट जोन आई. ए. एंड ए. डी. बैडमिंटन प्रतियोगिता' इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि जब हम एक टीम के रूप में कार्य करते हैं, तो खेल के मैदान से लेकर कार्यालय के प्रांगण तक श्रेष्ठता सिद्ध कर सकते हैं। शारीरिक सौष्ठव और मानसिक सृजनात्मकता का यही संतुलन एक आदर्श कार्य संस्कृति की पहचान है।

मैं इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय टीम के श्रम और समर्पण की सराहना करता हूँ और अपने विचार साझा करने वाले सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'प्रहरी' का यह अंक अपनी रोचकता और ज्ञानवर्धक सामग्री से सभी का मार्गदर्शन करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

(अजय कुमार झा)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

उपमहालेखाकार (ए.एम.जी.-III) बिहार, पटना

संदेश

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार की हिंदी गृह पत्रिका "प्रहरी" के 74वें अंक के प्रकाशन उपलक्ष्य में मैं सम्पूर्ण प्रहरी परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका हमारे विभाग के कर्मठ कर्मचारियों की सृजनशीलता, संवेदनशीलता तथा साहित्यिक अभिरुचि की प्रतीक रही है।

लेखापरीक्षा जैसे गम्भीर एवं उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य के बीच प्रहरी के माध्यम से हम अपने विचारों, अनुभवों और अभिव्यक्तियों को साझा करने का जो प्रयास करते हैं, वह न केवल हमारे मानसिक विकास में सहायक है बल्कि संगठन के भीतर संवाद और सहयोग की भावना को भी सशक्त करता है।

मैं 'प्रहरी' के 74वें अंक को एक सुंदर और पठनीय स्वरूप प्रदान करने के लिए पूरे संपादक मंडल के अथक प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ। साथ ही, उन सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट लेखनी से इस अंक को समृद्ध किया है।

मुझे विश्वास है कि यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भाँति पठनीय, प्रेरणादायक एवं विचारोत्तेजक सामग्री से परिपूर्ण होगा। सभी लेखकों, संपादक मंडल के सदस्यों तथा सहयोगियों को इस सामूहिक प्रयास के लिए हार्दिक बधाई।

(सुजय कुमार सिन्हा)
उपमहालेखाकार

उपमहालेखाकार (ए.एम.जी.-I) बिहार, पटना

संदेश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'प्रहरी' अपनी निरंतरता और प्रासंगिकता को बनाए रखते हुए 74वें अंक के पड़ाव पर पहुँच चुकी है। किसी भी संस्था के लिए उसकी गृह पत्रिका का नियमित प्रकाशन उसके जीवंत होने और उसके कर्मियों की वैचारिक समृद्धि का सबसे बड़ा प्रमाण है।

'प्रहरी' एक ऐसा सेतु है जो हमारे कार्यालय के विभिन्न अनुभागों, अधिकारियों और कर्मचारियों को वैचारिक स्तर पर एक सूत्र में पिरोता है। पत्रावलियों और लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों की औपचारिक भाषा से इतर, यह पत्रिका हमारी संवेदनाओं, अनुभवों और रचनात्मक कौशल को स्वतंत्र आकाश प्रदान करती है।

मैं 74वें अंक को मूर्त रूप देने के लिए पूरे संपादक मंडल को उनके अथक प्रयासों के लिए साधुवाद देता हूँ और इसमें योगदान देने वाले सभी लेखकों का अभिनंदन करता हूँ।

मेरी कामना है कि 'प्रहरी' इसी प्रकार हमारे कार्यालय की साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत को निरंतर समृद्ध करती रहे।

(पीयूष कुमार राय)
उपमहालेखाकार

सम्पादक की कलम से............

प्रिय पाठकों,

'प्रहरी' के 74वें अंक के साथ आपके समक्ष उपस्थित होते हुए मुझे अत्यंत हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है। 'प्रहरी' केवल मुद्रित पृष्ठों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि यह हमारे सामूहिक चिंतन, हमारी रचनात्मक ऊर्जा और हमारे दायित्व–बोध का एक जीवंत दर्पण है।

जैसा कि इसके नाम से ही परिलक्षित होता है, एक 'प्रहरी' का मूल धर्म है– सजगता, सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता की रक्षा करना। अपने कार्यक्षेत्र में हम सभी व्यवस्था की शुचिता और संसाधनों की प्रामाणिकता के सजग प्रहरी ही तो हैं। हमारा यह प्रयास रहता है कि हम अपनी पेशेवर जिम्मेदारियों के साथ–साथ अपनी साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना को भी उतनी ही प्रखरता से जीवित रखें।

इस पत्रिका के पन्नों में आपको न केवल हमारे कार्य–परिवेश की गंभीरता की झलक मिलेगी, बल्कि उन विविध रंगों का भी अक्स दिखाई देगा जो हमारे जीवन को संपूर्ण बनाते हैं। कार्यालय की फाइलों, आंकड़ों और व्यस्त दिनचर्या के बीच से समय निकालकर अपने विचारों को शब्द देने की जो लगन हमारे साथियों ने दिखाई है, वह वास्तव में सराहनीय है।

हाल के दिनों में हमने अपने प्रांगण में जो शानदार खेल और सामूहिक गतिविधियां देखी हैं, वे इस बात का प्रमाण हैं कि आपसी तालमेल, अनुशासन और टीम–भावना केवल खेल के मैदान तक सीमित नहीं रहती, बल्कि हमारे काम और हमारी रचनात्मकता में भी झलकती है। एक स्वस्थ और ऊर्जावान माहौल ही एक उत्कृष्ट 'प्रहरी' का निर्माण करता है, और यह अंक उसी सामूहिक जीवंतता का उत्सव है।

इस 74वें अंक को मूर्त रूप देने में जिन रचनाकारों, लेखकों और सहयोगियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया है, मैं उन सभी का हृदय से आभारी हूँ। आप सभी की लेखनी ने इस अंक को वैचारिक और साहित्यिक दोनों स्तरों पर समृद्ध किया है।

आशा है, 'प्रहरी' का यह अंक आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेगा और आपको एक सुखद पठन अनुभव प्रदान करेगा। पत्रिका को और अधिक परिष्कृत और प्रासंगिक बनाने के लिए आपके रचनात्मक सुझावों और प्रतिक्रियाओं का हमेशा की तरह स्वागत रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

शंकरा नंद झा

संपादक 'प्रहरी'

आपका पत्र मिला

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा व हकदारी) हरियाणा,
लेखा भवन, प्लाट नं 4 व 5 सैक्टर 33–बी,
चण्डीगढ़–160020

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HARYANA, LEKHA BHAWAN
PLOT NO. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020

हिं.क./पत्रि.प्रति./2025-26/240
दिनांक:- 05.12.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) कार्यालय,
बिहार, वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800001

महोदय/महोदया,

विषय: हिंदी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 73वें अंक का प्रेषण।

आपके कार्यालय के पत्र स. हिं.अ./ले.प./प्रहरी/34/2022-23/ दिनांक 28.11.2025 के माध्यम से हमें आपकी **हिंदी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 73वें अंक की प्रति** सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण अत्यंत सुंदर और कलात्मक है, जो पहली ही दृष्टि में आकर्षित करता है। पत्रिका का डिजाइन और रूपरेखा न केवल पेशेवर दृष्टिकोण से बेहतरीन है, बल्कि इसमें उपयोग की गई रंग योजना एवं तत्व संयोजन भी प्रभावशाली है। विशेष रूप से, पत्रिका में प्रकाशित तस्वीरें, कार्यालय की गतिविधियों और कार्यक्रमों को क्रमवार ढंग से दर्शाने में सफल रही हैं। पत्रिका में प्रकाशित आलेख अत्यंत सूचनाप्रद और समृद्ध है, जिनमें कार्यालय की विविध गतिविधियों, आगामी कार्यक्रमों और योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। यह न केवल पाठकों को कार्यालय गतिविधियों से अवगत कराती हैं, बल्कि उन्हें इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित भी करती हैं। विशेष रूप से पूरे वर्ष के दौरान आयोजित कार्यक्रमों का पत्रिका में प्रकाशित सारांश से कार्यालयीन गतिविधियों की जानकारी पाठकों को प्राप्त होती है तथा इसकी भावी गतिविधियों के लिए भी पाठकों के मन में उत्सुकता बनी रहती है।

पत्रिका के समग्र संकलन, संयोजन एवं चित्रण के लिए संपादक मंडल का प्रयास सराहनीय है। हम आशा करते हैं कि **"प्रहरी"** की उत्कृष्टता के लिए यह प्रयास बना रहेगा एवं कार्यालय की गतिविधियों, योजनाओं के साथ विविधताओं को उद्घाटित करने का यह एक सशक्त माध्यम बनी रहेगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ, आगामी अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

ASSISTANT DIRECTOR
(डॉ सुधा तिवारी)
सहायक निदेशक(राजभाषा)

Phone: - 0172-2614931, 2613211, 2615382, 2608494 Fax No- 0172-2603824 E-mail:- agacharyana@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

क्रमांक-रा.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1239586/2025 दिनांक:18-12-2025

सेवा में

सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार
पटना-800001

विषय:- हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 73वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

विषय:- हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 73वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका 'प्रहरी' के 73वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, पत्रिका हेतु सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री मनोज कुमार नं 1 की "राजभाषा हिंदी ही बन सकती है जनता और प्रशासन की शक्ति", श्री शंकरा नन्द झा की "सोनपुर पशु मेला: परंपरा, संस्कृति और व्यापार का अनुपम संगम", श्री रवि प्रभात की "पंचायती राज व्यवस्था का सफर", श्री प्रशांत प्रखर की "नाई की चतुराई" एवं श्री लेखराज मीणा की "जब मशीनें सोचने लगीं- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: खतरा या अवसर ?", आदि रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की सृजनशीलता के उत्थान एवं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, गॉर्टन कैसल
शिमला - 171 003

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

Office of the Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh,
Gorton Castle, Shimla-171 003

सं.रा.भा.अ./ले.प./बाह्यपत्रिका/I/1223549/2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार,
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना- 800001

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका 'प्रहरी' के 73वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 73वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। इस अंक में प्रकाशित लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय,

Digitally signed by
Om Prakash Doi
Date: 04-12-2025
17:06:18
सहायक निदेशक (राजभाषा)

Phone: +91-177-2652607 E-mail: agauhimachalpradesh@cag.gov.in

---

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,
सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ - 160017
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T.,
Sector-17E, CHANDIGARH – 160017
फोन (Phone): 0172 - 2702906, 2703117, 2709576,
ई-मेल (E-mail) - agaepunjab@cag.gov.in

सं.- रा.भा.अनु./पत्रिका समीक्षा/फा-10/2025-26/ दिनांक: /12/2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना – 800001

विषय: हिन्दी ई-पत्रिका 'प्रहरी' के 73वें अंक की पावती प्रेषित करने के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **'प्रहरी'** के 73वें अंक अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है।

पत्रिका में श्री रामौतार प्रसाद, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी की रचना **'पापा मेरे पापा'**, श्री शिव शंकर राय, पर्यवेक्षक की रचना **'अनुशासन'**, तथा श्री ललन कुमार सिंह, सहायक पर्यवेक्षक की रचना **'घर वापसी'** विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उपमहालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय

Digitally signed by
Rakesh Ranjan Mishra
Date: 16-12-2025
17:05:06
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपका पत्र मिला

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा–I) तमिलनाडु
ऑडिट भवन,
361, अण्णा सालै, तेनाम्पेट,
चेन्नै–600 018

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
TAMIL NADU
AUDIT BHAVAN,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET,
CHENNAI – 600 018.

सं. प्र.मले. (लेप-I)/हिं.अनु./प्रशं.पत्र/14-02/2025-26/51 दिनांक:19-12-2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार,
पटना – 800 001

विषय: हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 73वें अंक पर अभिमत।

महोदय,

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका **'प्रहरी'** के 73 *वें* अंक की ई-प्रति सादर प्राप्त हुई । धन्यवाद। राजभाषा हिन्दी के विकास यात्रा में पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों के भावनाओं एवं विचारों को शब्दों की माला में पिरोकर दूसरों तक पहुँचाने का प्रयास सच में प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय रोचक एवं स्तरीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं मुख पृष्ठ पर बापू टावर का चित्र भी अत्यंत आकर्षक है । रचनाएं- ' स्त्री विकास और स्त्रीत्व-संतुलन की तलाश' , 'जब मशीन सोचने लगीं' आर्टिफिशियल इंटलिजेंस खतरा या अवसर? ', 'भिखारी बनते बच्चे,' 'पापा मेरे पापा', 'नाई की चतुराई', 'घर वापसी', एवं 'लड्डू' विशेष रूप से सराहनीय है। सभी रचनाकारों का प्रयास प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की कामना के साथ पत्रिका के सफल संपादन एवं सुंदर प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सधन्यवाद!!

भवदीया,

Digitally signed by
Shibi T Manjooran
Date: 19-12-2025
15:47:24
षिबी टी. मांजूरान
सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष/Phone: 044 -2431 6400 फैक्स/Fax: 044 – 2433 0012 ई-मेल/Email:

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान) का कार्यालय, पश्चिम बंगाल
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Director General of Audit (Mines), West Bengal

सं./No.- 301 डीजीए(खान)/रा.अ./हि. पत्रिका/पावती/2025-26/ *दिनांक/Date : 10.12.2025*

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार ,पटना -००१

विषय:- हिंदी पत्रिका " प्रहरी " के 73वें अंक के पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका **"प्रहरी" का 73वां अंक** प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है तथा इसकी आंतरिक साज-सज्जा भी आकर्षक है।

पत्रिका में समाहित सभी लेख, कविता, कहानी, संस्मरण आदि ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। सुश्री अर्कजा आकृति की " मंत्रमुग्ध ", श्री ललन कुमार सिंह की " घर वापसी " , श्री शिव शंकर रॉय की " अनुशासन ",श्री अमित कुमार की " पुनर्मिलन " विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

पत्रिका में समाहित सभी लेख, कविता, कहानी, संस्मरण आदि ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। सारांशतः राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में इस पत्रिका ने अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है। पत्रिका भविष्य में भी अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हो, ऐसी कामना है।

भवदीय,

सहायक निदेशक
(राजभाषा)

1, काउंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता - 700 001
1, Council House Street, Kolkata - 700 001
दूरभाष/Telephone :- महानिदेशक/Director General : 2248-9674, **निदेशक/** Director : 22480379, **उप निदेशक/** Deputy Director : 2262-2645, **व. लेखापरीक्षा अधिकारी/**Sr. Audit Officer: 2248-5379, 2248-5600, 2248-1506, 2248-9503, 22481505, **सचिवालय/**Secretariat : 2210-8247 **फैक्स/**FAX : (033) 2243-5777
ई-मेल/E-mail: pdamineskol@cag.gov.in

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केन्द्रीय), मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सं.प्र.नि.ले.प.(कें.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/ I/1220411/2025दिनांक 03-12-2025
सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना
विषयः कार्यालयीन पत्रिका "प्रहरी" के 73वें अंक की समीक्षा संबंधी।
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 73वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक है।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
SUMITH S

सहायक निदेशक/राजभाषा

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur
सं.हि.अनु./म.ले.प.(ले.प.-II)/प्रतिक्रिया/20/2025-26/जा.क्र. 134 दिनांक: 10/12/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

विषय:- हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 73वें अंक की पावती के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 73वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री श्याम दत्त मिश्रा, स.ले.प.अ. की कविता 'नंबर वन है...श्याम', श्री ललन कुमार सिंह, सहायक पर्यवेक्षक का लेख 'घर वापसी', श्री रवि प्रभात, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'पंचायती राज व्यवस्था का सफर', श्री प्रशांत प्रखर, स.ले.प.अ. की कहानी 'नाई की चतुराई' आदि रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन से जारी)

भवदीया,

Digitally signed by
Priyanka B. Goswami
Date: 10-12-2025
12:52:52

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सत्यमेव जयते

हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियों !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहडी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूंज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की शबिदेशियाश, इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आजादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आजादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के

पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित श्कंठस्थ 2.0श में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। श्लीला राजभाषाश और श्लीला प्रवाहश जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर श्भारतीय भाषा अनुभागश की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:

''देसिल बयना सब जन मिट्ठा।''

अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम् ।

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह

50

(1975-2025)

राजभाषा – भारतीयभाषाणां मैत्रीसूत्रम्

भारतीय हॉकी के 100 वर्ष: गौरव, संघर्ष और पुनर्जागरण की गाथा

✍ श्री योगेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
(पूर्व राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी, कोच, कमेंट्रेटर एवं खेल समीक्षक)

भारत में हॉकी केवल एक खेल नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान की पहचान है। इसकी शुरुआत उन्नीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में हुई, जब ब्रिटिश सैनिकों ने इसे भारत में परिचित कराया। 1885 में कलकत्ता में पहला हॉकी क्लब बना और 1908 में बॉम्बे में 'बॉम्बे हॉकी एसोसिएशन' की स्थापना हुई। धीरे–धीरे यह खेल पूरे देश में लोकप्रिय होने लगा। 7 नवंबर 1925 को ग्वालियर में इंडियन हॉकी फेडरेशन (IHF) की स्थापना हुई, जिसने भारतीय हॉकी को संगठित स्वरूप दिया। इसके एक साल बाद, 1926 में भारतीय टीम ने न्यूज़ीलैंड का पहला विदेशी दौरा किया। यहीं से भारत की अंतरराष्ट्रीय हॉकी यात्रा की शुरुआत हुई।

1928 – एम्स्टर्डम: स्वर्णिम आरंभ

भारतीय हॉकी की अंतरराष्ट्रीय यात्रा का पहला सुनहरा अध्याय 1928 में एम्स्टर्डम ओलंपिक में लिखा गया।कप्तान जयपाल सिंह मुंडा और कोच बी. ए. जॉर्ज के नेतृत्व में भारत ने पहली बार ओलंपिक हॉकी टूर्नामेंट में भाग लिया। टीम में मेजर ध्यानचंद, बाबू नान्हे सिंह, ब्रिटिश इंडिया रेलवे और पंजाब पुलिस के उत्कृष्ट खिलाड़ी शामिल थे। भारत ने इस प्रतियोगिता में एक भी मैच नहीं हारा; उसने अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों को बड़े अंतर से पराजित किया। फाइनल में भारत ने नीदरलैंड को 3–0 से हराया। मेजर ध्यानचंद ने पूरे टूर्नामेंट में 14 गोल दागे और अपने अद्भुत नियंत्रण, ड्रिब्लिंग और पासिंग से पूरे विश्व को चकित कर दिया। यह केवल स्वर्ण पदक की जीत नहीं थी; यह औपनिवेशिक भारत के आत्मगौरव की पुनर्स्थापना थी। उस दौर में भारत अभी भी ब्रिटिश शासन के अधीन था, परंतु हॉकी के मैदान में भारतीय तिरंगे की छाया पूरे यूरोप पर छा गई थी।

1932 – लॉस एंजेलिस: रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन

एम्स्टर्डम की सफलता के बाद भारतीय हॉकी अब पूरी दुनिया की नज़रों में थी। कप्तान लाल शाह बख्श की टीम ने 1932 लॉस एंजेलिस ओलंपिक में जो कारनामा किया, वह आज भी इतिहास का हिस्सा है। भारत ने अमेरिका को 24–1 और जापान को 11–1 से हराकर फिर से स्वर्ण जीता। ध्यानचंद और उनके भाई रूप सिंह ने मिलकर 23 गोल दागे–यह आज तक ओलंपिक इतिहास का सबसे बड़ा गोल अंतर है। उनकी जोड़ी को **'मैजिक ब्रदर्स ऑफ हॉकी'** कहा जाने लगा। यह भारत का लगातार दूसरा स्वर्ण पदक था और दुनिया ने स्वीकार किया कि भारतीय हॉकी की गति, पासिंग और टीम वर्क अतुलनीय है।

1936 – बर्लिन: हिटलर के सामने भारतीय जादू

जर्मनी की धरती पर भारतीय हॉकी का जादू और प्रखर हो उठा। कप्तान मेजर ध्यानचंद और कोच पंकज गुप्ता की टीम ने फाइनल में जर्मनी को 8–1 से रौंदा। उस मैच में स्वयं एडॉल्फ हिटलर स्टेडियम में उपस्थित था। ध्यानचंद के खेल से वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने उन्हें अपनी सेना में अधिकारी पद का प्रस्ताव दिया, जिसे ध्यानचंद ने ससम्मान ठुकरा दिया।

यह जीत भारत का लगातार तीसरा स्वर्ण पदक था। अब हॉकी केवल खेल नहीं रही; यह भारतीय अस्मिता और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बन चुकी थी।

1948 – लंदन: आज़ाद भारत का गौरव

15 अगस्त 1947 को भारत आज़ाद हुआ और एक वर्ष बाद आज़ाद भारत पहली बार ओलंपिक में उतरा। कप्तान के. डी. सिंह 'बाबा' और कोच पंकज गुप्ता की टीम ने फाइनल में इंग्लैंड को 4–0 से हराया। बलबीर सिंह सीनियर ने दो गोल किए। जब खिलाड़ी तिरंगे के साथ मैदान में उतरे, तो पूरा स्टेडियम खड़ा होकर भारत का स्वागत कर रहा था। यह केवल एक स्वर्ण नहीं, बल्कि आज़ादी की प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान का प्रतीक था। ब्रिटेन को उसकी ही धरती पर हराना, गुलामी की जंजीरों को खेल के माध्यम से तोड़ देने जैसा था।

1952 – हेलसिंकी: बलबीर का जादू

हेलसिंकी, 1952 में भारतीय हॉकी अपने शिखर युग में थी। कप्तान के. डी. सिंह 'बाबा' और कोच ए. बी. कॉर्प के नेतृत्व में टीम ने फाइनल में नीदरलैंड को 6–1 से हराया। बलबीर सिंह सीनियर ने अकेले 5 गोल किए। यह रिकॉर्ड आज तक किसी भी ओलंपिक फाइनल में नहीं टूटा। इस जीत के साथ भारत ने पाँचवाँ लगातार स्वर्ण पदक हासिल किया। दुनिया भारतीय हॉकी को "अनबीटेबल इंडिया" कहने लगी।

1956 – मेलबर्न: अनुशासन और अजेयता

यह भारत की अजेयता का युग था। कप्तान बलबीर सिंह सीनियर और कोच पंकज गुप्ता के नेतृत्व में भारत ने पूरे टूर्नामेंट में एक भी गोल नहीं खाया। फाइनल में भारत ने पाकिस्तान को 1–0 से हराया और लगातार छठा स्वर्ण पदक जीता। यह जीत भारतीय अनुशासन, फिटनेस और मानसिक दृढ़ता की मिसाल बन गई। दुनिया ने स्वीकार किया, "हॉकी का राजा भारत है।"

1960 – रोम: पहली हार की सीख

1960 में रोम ओलंपिक में भारत लगातार सातवाँ स्वर्ण जीतने के लिए तैयार था, लेकिन किस्मत ने करवट ली। कप्तान लेस्ली क्लॉडियस और कोच बलबीर सिंह सीनियर की टीम ने शानदार प्रदर्शन किया, परंतु फाइनल में पाकिस्तान से 0–1 से हार गई। यह भारत की पहली ओलंपिक हार थी, जिसने टीम को आत्मविश्लेषण की ओर प्रेरित किया। तकनीकी बदलाव, फिटनेस और यूरोपीय खेल–शैली की समझ अब प्राथमिकता बन गई।

1964 – टोक्यो: स्वर्ण की वापसी

चार वर्ष बाद भारत ने अपना खोया हुआ गौरव वापस पाया। कप्तान चरणजीत सिंह और कोच बलबीर सिंह सीनियर की टीम ने फाइनल में पाकिस्तान को 1–0 से हराया। गोलकीपर शंकर लक्ष्मण का प्रदर्शन अद्भुत रहा। भारत ने एक बार फिर विश्व हॉकी के शिखर पर अपना परचम लहराया।

1968 – मेक्सिको सिटी: कांस्य संघर्ष

अब हॉकी के मैदान पर यूरोपीय टीमें भी मजबूत हो चुकी थीं। कप्तान प्रेमनाथ और कोच बलदेव सिंह की टीम ने कांस्य पदक जीता। हरबिंदर सिंह और अशोक कुमार जैसे युवा खिलाड़ियों ने भारत की प्रतिष्ठा को बनाए रखा। यह दौर भारतीय हॉकी में संक्रमण का समय था।

1972 – म्यूनिख: परिवर्तन का दौर

कप्तान हरमोहन सिंह और कोच बलदेव सिंह के नेतृत्व में भारत ने फिर कांस्य पदक जीता। लेकिन इस समय तक एस्ट्रोटर्फ (कृत्रिम मैदान) का युग शुरू हो चुका था। भारतीय खिलाड़ियों की पारंपरिक पासिंग और ड्रिब्लिंग शैली को नई तकनीक और गति के अनुरूप ढालना आवश्यक हो गया।

यह परिवर्तन की पीड़ा का समय था।

1980 –मॉस्को: आखिरी स्वर्ण

ओलंपिक इतिहास में भारत का आठवाँ स्वर्ण पदक मॉस्को (1980) में आया। कप्तान वी. भास्करन और कोच बलदेव सिंह की टीम ने फाइनल में स्पेन को 4–3 से हराया। मोहम्मद शाहिद, जफर इकबाल और सुरिंदर सिंह सोढ़ी जैसे खिलाड़ी भारतीय हॉकी की नई पहचान बन गए। यह वह दौर था जब हॉकी में परिवर्तन की लहर तेज़ हो रही थी। एस्ट्रोटर्फ, नए नियम और यूरोपीय कोचिंग शैली ने खेल की दिशा ही बदल दी।

2020 टोक्यो ओलंपिक – नई सुबह

कप्तान मनप्रीत सिंह और कोच ग्राहम रीड की टीम ने 41 वर्षों बाद ओलंपिक में पदक जीतकर इतिहास रचा। भारत ने जर्मनी को 5–4 से हराकर कांस्य पदक जीता। हरमनप्रीत सिंह के ड्रैग–फ्लिक, रुपिंदर पाल सिंह की सटीक पासिंग और पी. आर. श्रीजेश की दीवार–जैसी गोलकीपिंग ने भारत को नई दिशा दी। यह जीत आधुनिक युग के पुनर्जागरण की घोषणा थी।

2024 पेरिस ओलंपिक – निरंतरता की जीत

भारतीय हॉकी अब निरंतरता और स्थिरता के दौर में है। कप्तान हरमनप्रीत सिंह और कोच क्रेग फुल्टन की टीम ने ऑस्ट्रेलिया को हराकर कांस्य पदक जीता। युवा सितारे विवेक सागर प्रसाद, अभिषेक और हार्दिक सिंह ने यह साबित कर दिया कि भारतीय हॉकी का भविष्य उज्ज्वल है। टीम का समर्पण, फिटनेस और वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने उसे नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। आज भारतीय हॉकी फिर से विश्व के शीर्ष चार देशों में शुमार है, और यह यात्रा संकेत देती है कि "स्वर्णिम भविष्य दूर नहीं, यह बस अगले पड़ाव पर प्रतीक्षा कर रहा है।"

1975 विश्व कप – स्वर्णिम अध्याय

1975 का कुआलालंपुर विश्व कप भारतीय हॉकी के इतिहास का सबसे गौरवशाली अध्याय है। कप्तान अजित पाल सिंह और कोच बलदेव सिंह की टीम ने फाइनल में पाकिस्तान को 2–1 से हराकर भारत को उसका पहला और अब तक

का एकमात्र विश्व कप स्वर्ण पदक दिलाया। अशोक कुमार का निर्णायक गोल और पूरी टीम का संघर्ष आज भी स्मृतियों में जीवित है। यह जीत भारत की तकनीकी परिपक्वता और टीम भावना का प्रतीक थी।

भारतीय महिला हॉकी –संघर्ष से सफलता तक की प्रेरक यात्रा

भारतीय महिला हॉकी टीम की कहानी भी उतनी ही प्रेरक है जितनी पुरुषों की। 1970 के दशक में संगठित रूप से महिला हॉकी की शुरुआत हुई और 1974 में पहली बार विश्व कप में भागीदारी दर्ज की गई। 1980 मॉस्को ओलंपिक में महिलाओं ने भी पदार्पण किया और चौथा स्थान प्राप्त किया, जो उस समय बड़ी उपलब्धि थी।

2002 मैनचेस्टर राष्ट्रमंडल खेलों में कप्तान रूपा सोढी के नेतृत्व में भारत ने कांस्य पदक जीतकर इतिहास रचा। कोच एम. के. कौशिक और ज्योति सनी जैसे खिलाड़ियों की बदौलत उस समय भारतीय महिला हॉकी का पुनर्जन्म हुआ।

इसके बाद 2016 रियो ओलंपिक में लंबे अंतराल के बाद टीम ने वापसी की और 2020 टोक्यो ओलंपिक में कप्तान रानी रामपाल और कोच शोर्ड मारिन के नेतृत्व में सेमीफाइनल तक पहुँचकर दुनिया को चकित कर दिया।

2024 पेरिस ओलंपिक में कप्तान सविता पूनिया, वंदना कटारिया और नवनीत कौर जैसी अनुभवी खिलाड़ियों ने टीम को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

महिलाओं की यह यात्रा बताती है कि भारतीय हॉकी का भविष्य अब केवल पुरुषों तक सीमित नहीं–यह समर्पण, संघर्ष और सम्मान की साझा गाथा है।

स्वर्ण युग की ओर वापसी

1925 से 2025 तक का यह 100 वर्षीय सफर गौरव, संघर्ष और पुनर्जागरण की गाथा है।

भारत ने अब तक हॉकी में 8 ओलंपिक स्वर्ण, 1 रजत, 3 कांस्य और 1 विश्व कप स्वर्ण (1975) जीता है। ध्यानचंद के जादू से लेकर श्रीजेश की दीवार तक, और रानी रामपाल से लेकर सविता पूनिया तक, यह यात्रा बताती है कि भारतीय हॉकी केवल मैदान की कहानी नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा की धड़कन है। जब भारतीय हॉकी अपनी शताब्दी मना रही है, यह केवल स्मरण का नहीं, बल्कि नए स्वर्ण युग की ओर लौटने का संकल्प है।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

◆

हमें हिंदी पर अभिमान है

✍ श्री योगेश कुमार मिश्र
सहायक निदेशक (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात) का कार्यालय, रांची, झारखंड

विश्व पटल पर रेखांकित, विश्व भाल की मुकुटमणि।
भाषायी मनभेद भंवर की हिंदी ही जलयान है।
हमें हिंदी पर अभिमान है।

जैसे लिखते वैसे ही कहते, कोई मतभेद नहीं इसमें।
सबको गले लगाने को हिंदी प्यारी सुजान है।
हमें हिंदी पर अभिमान है।

मंदारिन, स्पेनिश, इंग्लिश, में अपनत्व नहीं मिलता।
जो रस है अपनी हिंदी में उसका हर पल गुणगान है। हमें हिंदी पर अभिमान है।

वैदिक–लौकिक संस्कृत से गुजरी, पाली–प्राकृत, अपभ्रंश–खड़ी।
वाल्मीकि–काली, तुलसी–भारतेंदु, अब मानक हिंदी प्रयाण है। हमें हिंदी पर अभिमान है।

मैक्ग्रेगर बुल्के ग्रियर्सन, इनका भी है अभिनन्दन।
इनकी सेवा से मातृभूमि का प्रफुल्ल मन और प्राण है। हमें हिंदी पर अभिमान है।

मानस का वह हंस चितेरा, सूर सूर्य सा उजियारा।
विद्यापति की मीठी बयना से लोमहर्षित दुनिया जहान है।
हमें हिंदी पर अभिमान है।

मीरा– रैदास का भक्ति भाव, जायसी–कबीर का प्रभाव।
गुप्त नहीं रह सकता दिनकर, निराला–पन्त की तान है।
हमें हिंदी पर अभिमान है।

परीक्षा गुरु प्रथम प्रयास, हिंदी की पहली उपन्यास।
श्रीनिवास से प्रेमचंद तक रचनाधर्मिता हमारी पहचान है।
हमें हिंदी पर अभिमान है।

कर्म, योग, गुरु, जंगल, अवतार जैसे शब्दों का समाहार
विश्वभाषा के मस्तक पर बिंदी, चमकी हिंदी अविराम है।
हमें हिंदी पर अभिमान है।

सहज सुलभ सुंदर भाषा, पूरी करती सबकी आशा।
जन–जन को जोड़ने वाली, चहुँ ओर इसका जय गान है।
हमें हिंदी पर अभिमान है।

सर्वग्राही यह ऐसी, सब भाषा हो जाती इसकी।
विश्व भाल के हर विवाद का हिंदी ही तो निदान है।
हमें हिन्दी पर अभिमान है।

◆

जीवन-साथी

✍ **श्रीमति अनामिका प्रकाश**
द्वारा – श्री रवि प्रकाश, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

यूँही गुजर जाएगा,जिंदगी का सफर भागते–भागते.
एक पल थक कर साथ तो बैठ जाया करो,
कि होगी गुफ़्तगू–
तुमने कई दफ़ा कई लोगों से की है,
एक बार फुर्सत से
"सुनो" ही कह जाया करो।

बिताए होंगे तुमने
सबके साथ कई हसीन पल,
भुला न पाओगे–
वह एक याद हूँ मैं।

नहीं कहती हूँ आपसे
कि चाँद तोड़कर लाओ,
पर जब आते हो,
एक मुस्कान साथ लाया करो।

पर थोड़ी–थोड़ी उम्मीद
अब भी बाकी है
कि यह जीवन मेरा भी सँभल जाएगा।
कभी कोई तो होगा
मेरे जीवन में भी,
जो यहाँ मेरा–
सिर्फ़ मेरा–कहलाएगा।

गुज़र रही है उम्र,
पर जीना सबको पड़ता है।
देख लो, औरों की ख़ातिर
इस पर बहना पड़ता है।

इतने रंग जितने लोचन,
स्वर्ण सुहागन जीवन–मन,
भाग्य रजत की भी महिमा–
जितने फल, उतना भोजन।

◆

वर्तमान युग में निज भाषा का महत्त्व

✍ **मनोज कुमार नं.-1**
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

आज का युग विज्ञान, तकनीक और सूचना का युग है। इस युग में किसी भी देश की प्रगति केवल संसाधनों या तकनीकी विकास से नहीं, बल्कि उस ज्ञान को आम नागरिकों तक कितनी सहजता और सुलभता से पहुँचाया जा रहा है, इससे तय होती है। इसलिए भाषा की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। यदि विज्ञान, तकनीक, प्रशासन और व्यापार की भाषा सरल, सहज और देश की अपनी भाषा में हो, तो विकास की गति कई गुना तेज हो सकती है और नागरिक आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

महात्मा गाँधी ने भी कहा था कि राष्ट्र के विकास के लिए अपनी भाषा का प्रयोग आवश्यक है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कहा था–

"निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को मूल
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।"

विज्ञान और तकनीक का वास्तविक उद्देश्य मानव जीवन को सरल, सुरक्षित, सुविधाजनक और समृद्ध बनाना है। यह उद्देश्य तब तक पूरा नहीं हो सकता, जब तक इसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक न पहुँचे। यदि वैज्ञानिक शोध, तकनीकी उन्नति, डिजिटल सेवाएँ और नई खोजें केवल विदेशी या अत्यंत कठिन भाषा में उपलब्ध हों, तो वे आम नागरिक की पहुँच से बाहर हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में विज्ञान कुछ गिने–चुने शिक्षित या शहरी वर्ग तक सीमित रह जाता है और उसका व्यापक सामाजिक उपयोग नहीं हो पाता। इससे समाज में एक नया भेद उत्पन्न हो जाता है–जानने वालों और न जानने वालों के बीच।

इसके विपरीत, जब विज्ञान और तकनीक की शिक्षा मातृभाषा या जनभाषा में दी जाती है, तो उसकी समझ कहीं अधिक गहरी और प्रभावी होती है। विद्यार्थी किसी भी विषय को अपनी भाषा में जल्दी ग्रहण करते हैं, उसके पीछे के तर्क को समझते हैं और उसे अपने अनुभव से जोड़ पाते हैं। मातृभाषा में अध्ययन करने से भय और संकोच कम होता है, जिससे विद्यार्थी खुलकर प्रश्न पूछते हैं, प्रयोग करते हैं और नई संभावनाओं तथा शोधों के बारे में सोचते हैं। यही जिज्ञासा और प्रश्न करने की प्रवृत्ति वैज्ञानिक सोच को जन्म देती है।जब तकनीकी ज्ञान जनभाषा में उपलब्ध होता है, तो उसका लाभ केवल छात्रों तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि किसान, कारीगर, मजदूर और छोटे उद्यमी भी उससे जुड़ पाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कृषि से जुड़ी वैज्ञानिक जानकारी, मौसम की भविष्यवाणी या डिजिटल भुगतान प्रणाली स्थानीय भाषा में समझाई जाए, तो ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीक का उपयोग तेजी से बढ़ सकता है। इससे उत्पादन में वृद्धि होती है और लोगों का जीवन स्तर सुधरता है।

इस प्रकार, मातृभाषा में विज्ञान और तकनीक का प्रसार केवल शिक्षा का माध्यम नहीं, बल्कि नवाचार की संस्कृति विकसित करने का आधार है। जब लोग अपनी भाषा में सोचते, समझते और प्रयोग करते हैं, तो वे केवल उपभोक्ता नहीं रहते, बल्कि ज्ञान के सृजनकर्ता बनते हैं। यही प्रक्रिया किसी भी देश को वैज्ञानिक दृष्टि से सशक्त, आत्मनिर्भर और प्रगतिशील बनाती है।

प्रशासनिक क्षेत्र में भी भाषा की सुलभता अत्यंत आवश्यक है। यदि सरकारी योजनाएँ, नियम–कानून और प्रक्रियाएँ आम जनता की भाषा में हों, तो लोगों की भागीदारी बढ़ती है, पारदर्शिता आती है और शासन तथा जनता के बीच की दूरी कम होती है। इससे लोकतंत्र मजबूत होता है और प्रशासन अधिक प्रभावी बनता है। परिणामस्वरूप, सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र जनता अधिक प्रभावी ढंग से उठा पाती है।

व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में भी भाषा का विशेष योगदान है। जब कारोबारी, कारीगर, किसान, शिल्पकार और उद्यमी अपनी भाषा में तकनीकी जानकारी, बाज़ार की समझ और सरकारी सहायता से जुड़ी सूचनाएँ प्राप्त करते हैं, तो वे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं। स्थानीय भाषा में व्यापार करने से छोटे और मध्यम उद्यमों को बढ़ावा मिलता है, जिससे रोजगार के अवसर सृजित होते हैं और आर्थिक आत्मनिर्भरता मजबूत होती है।

अतः यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक युग में भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि विकास का आधार है। अपनी भाषा में सहज, सुलभ और आधुनिक ज्ञान का प्रसार किसी भी देश को तेज़ी से आगे बढ़ा सकता है। जब नागरिक अपनी भाषा में सोचते, समझते और सृजन करते हैं, तभी सच्चे अर्थों में आत्मनिर्भर और सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव होता है।

◆

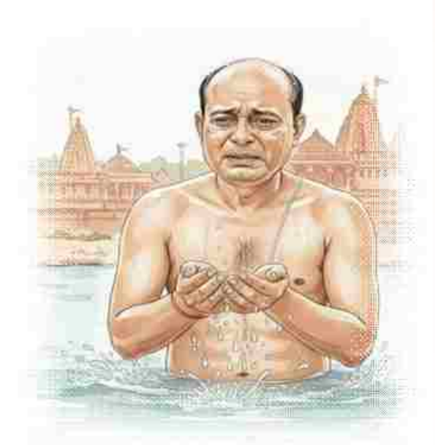

तर्पण (गया जी में ....)

✍ श्याम दत्त मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

तर्पण के लिए आज
जैसे ही उठे मेरे हाथ
चलचित्र जैसा मन में
कुछ लगा चलने।
लगा... स्कूल की अंतिम घंटी बजी हो
और मैं कर रहा हूं पिताजी का इंतजार

कमरे का चक्कर लगाना
उभरी तोंद पर जोर जोर से उछलना
ऐसा लगा
कल की ही तो है बात।

लगा.... मैं तैयार हूं मेला जाने के लिए
और.... जोह रहा हूं उनका
दफ्तर से आने की बाट
लगा... बाजार जा रहा हूं बैठा हूं मैं
साईकिल के डंडे पर
और टकरा रही हो
गर्दन पर मेरे
उनकी गर्म गर्म सांस

पानी देते देते
न जाने क्यूं आज
यादों ने लिया घेर मुझे...!
उनकी पीठ पर बैठ

फिर बड़ा हुआ... मैं
और वे... सेवा निवृत
समय ने ले ली थी करवट
अब वे जोहने लगे थे मेरी बाट

अब जाना होता था बाहर मुझे
दूर ऑडिट पर
और होता था आना
कई दिनों पर
उस दिन....हो जाए कितनी भी रात
वे करते थे डिनर मेरे ही साथ

कर रहा था महसूस
ठीक वैसा ही आज
जैसे लगाए बैठे हों
वे मेरी आस
पितरों के साथ..!
मैं आऊंगा
जरूर आऊंगा
था उन्हें विश्वास।

यादों की बरसात यूंही उमड़ती रही
और अश्रु की धारा फूट पड़ी
फिर चलने लगी अनवरत
अब सराबोर हो रहा था
तन–मन मेरा ...!

भारी भारी था
कुछ देर पहले जो मन
जैसे जैसे अंदर बाहर
होता गया मैं गीला
होता गया हल्का...!

लगा...आत्मा धुलकर
हो गई हो पवित्र
मन अब आह्लादित था
आनंदित था
बयां करना जिसे संभव नहीं।

"I cannot think of any need in childhood as strong as the need for a father's protection."
"मैं बचपन में एक पिता के संरक्षण के जितना किसी और जरुरत के बारे में नहीं सोच सकता।"
सिगमंड फ्रायड
(आधुनिक मनोविज्ञान के जनक)

◆

ख़रबूज़ा और पति

✍ भुवन भाष्कर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बेहद मार्मिक वक्त होता है वह, जब आपके जतन से लाए गए ख़रबूज़े का कटना शुरू हो, उसके पहले ही आपकी बीवी की एक उँगली अपने आप, बिना किसी कोशिश के, अनायास उस ख़रबूज़े में घुस जाती है।

सच बात तो यह है कि आपकी बीवी की उँगली उस पिलपिले ख़रबूज़े में नहीं घुसती, जिसे आप ऑफिस से घर लौटते वक्त ख़रीद लाए थे। वह आपके शरीर के उस गुप्त, संवेदनशील स्थान में जा घुसती है, जहाँ आप उसकी मौजूदगी कतई नहीं चाहते थे।

"किसने कहा था आपसे ख़रबूज़ा लाने के लिए?"

यह सवाल आपकी उस सद्भावना के पुट्ठों पर लात पड़ने जैसा है, जिससे आप महिला–दिवस के आसपास से ही ओत–प्रोत थे। आप दिल से ठान चुके थे कि आगे जीवन के जितने भी दिन शेष हैं, उनका सदुपयोग बीवी की नज़रों में चढ़ने के लिए किया जाएगा। आप बीवी की मदद करने में जान लड़ा देंगे। उसके हर काम में मदद करेंगे, और हर काम में मदद न भी कर सके, तो साग–सब्ज़ी और फल ख़रीदने जैसे आसान काम को आप कर ही गुजरेंगे।

पर बहुत जल्दी, दुनिया के हर दूसरे ख़ाविंद की तरह, आप भी यह समझ जाते हैं कि जो टास्क आपने अपने लिए तय किया था, वह दाल–भात खाने जितना आसान नहीं था। आप उस पसीने का हिसाब लगाते हैं, जो आप अपनी बीवी को इम्प्रेस करने के चक्कर में बहा चुके हैं, तो पता चलता है कि उतनी मेहनत में तो एवरेस्ट पर चढ़कर तिरंगा फहराया जा सकता था। इतने पसीने से आप अपने ऑफिस की सारी फ़ाइलें बहा सकते थे। वह पसीना आपको अगला प्रमोशन दिलाने के लिए काफ़ी हो सकता था, पर पत्नी आपके इस पसीने की क़द्र करने को राज़ी नहीं दिखती।

सवाल अब तक आपके सामने मज़बूती से पाँव जमाए खड़ा है–

"किसने कहा था आपसे ख़रबूज़ा लाने के लिए? व्यास जी की नक़ल करने की सूझी है आपको?"

"अरे, मैंने सोचा कि तुम खुश हो जाओगी।"

"यह आपको किसने बताया है कि सड़े ख़रबूज़े लाने से बीवियाँ खुश हो जाती हैं?"

"ख़रीदते वक्त तो बहुत अच्छी हालत में दिख रहा था यह।"

"यदि ख़रीदते वक्त आपने वाक़ई देख लिया होता उसे, तो यह नौबत आती ही क्यों? आपका ध्यान इस वक्त किसी और नज़ारे का लुत्फ़ ले रहा होगा।"

"ऐसा नहीं है यार, बूढ़ा हो चुका हूँ, अब काहे के नज़ारे।"

आप हिम्मत करके मुस्कराते हैं। अब आपका मनोबल गिरने के ख़तरे के निशान के आसपास पहुँचने की तैयारी कर रहा होता है।

"तो फिर?"

"अरे, भरोसे का दुकानदार है वह।"

आप पाते हैं कि आपकी आवाज़ में अब वह दम नहीं रहा, जो घर में घुसते वक्त था।

"वही तो! भरोसे के दुकानदार ने ठग–ठग करके आपको पकड़ा दिया और आपने ले लिया।"

"गर्मी का फल है यार, लग गई होगी इसे भी गर्मी।"

"कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि इस ख़रबूज़े ने आपसे हाथ जोड़कर रिक्वेस्ट की हो–

'सर, मैं गरीब हूँ, मेरी तबियत ठीक नहीं है, लू लग गई है मुझे, अनाथ हूँ मैं, मुझे गोद ले लीजिए, वरना मैं मर जाऊँगा।'"

"अरे ना, ऐसा कुछ नहीं है, भाग्यवान।"

"दरअसल हुआ यह होगा कि आपने ज़हमत ही नहीं की होगी कार से उतरने की। आपको हर चीज़ अपने हाथ में ही चाहिए। भाँप गया होगा काइयाँ दुकानदार कि यही वह अकलमंद बंदा है, जिसे अपने पिलपिले, बासी, बदबूदार ख़रबूज़े आसानी से टिकाए जा सकते हैं।"

"अरे, मौसमी फल है यह, हो जाता है कभी–कभी ऐसा।"

"चलिए, एक ख़रबूज़े के साथ हो तब भी ठीक है, लेकिन इस दूसरे और तीसरे की तबियत भी कुछ ठीक नहीं लग रही मुझे तो। अच्छा यह बताइए– आपको ख़रबूज़े खाने थे या कॉलोनी में उनकी दुकान लगानी थी?"

"मैं समझा नहीं।"

"समझते आप, तो रोना ही क्या था। ये तीन–तीन ख़रबूज़े क्यों टाँग लाए आप?"

अब आपकी हिम्मत टूटने लगती है। दरअसल उस दुकानदार ने कहा था कि–

"क्या कहा उसने? यही कहा होगा न कि आप जैसे समझदार, पढ़े–लिखे अफ़सर कभी–कभी ही दुकान पर आते हैं?"

"नहीं, ऐसा तो नहीं।"

"फिर?"

"उसने कहा कि बिल्कुल शक्कर जैसे मीठे हैं।"

"तो ऐसा कीजिए, ये सारे ख़रबूज़े लौटा आइए। उस दुकानदार को बताइए कि वह चाय में शक्कर की जगह इन ख़रबूज़ों का ही इस्तेमाल कर ले। और फिर गलती तो आपने की– आपको तो उसे फ़ौरन शुगर–मिल खोलने और उसमें अपनी पार्टनरशिप का ऑफ़र दे देना चाहिए था।"

अब आपका कॉन्फ़िडेंस, आपकी सद्भावना का हाथ पकड़कर पाताल में घुस जाता है। आपको लगता है कि आप गलती से ख़रबूज़े की जगह ज़िंदा बम ख़रीद लाए थे और अब हिंदुस्तानी सेना की गिरफ़्त में हैं। आपको यह भी लगता है कि जो ख़रबूज़े आप ख़रीद लाए हैं, वे आपके पिछले जन्म के पापों का फल हैं, और उन्हें भुगते बिना आपका मोक्ष मुमकिन नहीं।

"छोड़ो भी अब यार, तुम तो च्यूइंग–गम की तरह इस मामले को चबा रही हो। मामूली–सा ख़रबूज़ा ही तो है।"

"न बात मामूली है, न यह ख़रबूज़ा मामूली है। मैं आपके इरादे समझ चुकी हूँ।"

अब आपके पैरों के नीचे की ज़मीन अपनी जगह छोड़ देती है।

"क्या समझ चुकी हो?"

"यही कि किसी भी काम को ढंग से करने में आपको कोई दिलचस्पी नहीं है। आप इस हद तक लापरवाह हैं कि किसी भी सीधे–सच्चे काम को भी बिगाड़ सकते हैं।"

आप रोनी–सी शक्ल बनाकर कहते हैं की

"ठीक है न, अब कभी नहीं लाऊँगा ख़रबूज़े।"

"यही सुनना चाहती थी मैं। मैं जानती थी, आप यही कहेंगे। दरअसल आप कुछ करना ही नहीं चाहते। आप जानबूझकर ऐसा करते हैं, ताकि आपसे कभी कुछ करने को कहा ही न जाए।"

आपकी सद्भावना, बीवी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने की इच्छा, एक बार फिर मुँह के बल धोबी–पछाड़ खाकर गिर जाती है। बीवी की तरफ़ ताकने की हिम्मत नहीं होती और ख़रबूज़ों की तरफ़ आप देखना नहीं चाहते। ऐसे में आप ज़मीन की तरफ़ देखते हैं, पर वह भी फटने से मना कर देती है।

ऐसा हुआ तो होगा आपके साथ भी। अब तक नहीं हुआ है, तो कल हो सकता है। पर जब भी हो, मन गिराने की ज़रूरत नहीं। दरअसल आज तक कोई भी मर्द ऐसा ख़रबूज़ा ख़रीदने में कामयाब नहीं हो सका है, जो उसकी बीवी को पसंद आ जाए।

◆

निशान

✍ **राजू कुमार सिंह**
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जितेंद्र अपने पिता की तस्वीर के सामने बैठा हुआ था और उसकी आँखों से अविरल आँसू बह रहे थे।

आज की घटना ने उसे काफी व्यथित कर दिया था और वह अपने मनोभावों को नियंत्रित नहीं कर पा रहा था। दरअसल उसकी पोती, जो कक्षा पाँच की छात्रा थी, अपनी पेंटिंग दिखा रही थी जिसमें एक दीवार पर उँगलियों के निशान बने हुए थे।

नीचे कक्षा अध्यापिका की टिप्पणी भी थी – ''हर बच्चे को अपने दादा–दादी से ऐसा ही प्यार करना चाहिए।''

जितेंद्र की आँखों के सामने पिता का चेहरा उभरने लगा। पिछले पचास वर्षों में पिता काफी दुर्बल हो गए थे और मुश्किल से चल पाते थे। चलते समय दीवार का सहारा लेना पड़ता था। गीली उँगलियों के निशान दीवार पर आकार लेने लगे थे।

जितेंद्र की पत्नी, मंजुला को पिता की यह आदत बिल्कुल पसंद नहीं थी। वह अक्सर शिकायत करती कि दीवार की पेंट खराब हो रही है। वह पत्नी को समझाता कि पिता दुर्बल हो चुके हैं और बिना सहारे के चलना उनके लिए संभव नहीं है।

उस दिन रविवार था। पिता के सिर में दर्द था। उन्होंने सिर में तेल लगाया और चलते हुए दीवार का सहारा लिया, जिससे दीवारों पर तेल के दाग लग गए। फिर क्या था, मंजुला चिल्ला पड़ी और जितेंद्र से कहने लगी कि यहाँ पिता की आदत से दीवार खराब हो रही है और आप कुछ कहते भी नहीं। पत्नी की बात सुनकर उसे गुस्सा आ गया और उसने पिता को डांटते हुए कहा – ''इतनी उम्र हो गई है और यह ज्ञान नहीं है कि गंदे हाथों से दीवार की पेंट खराब होती है।''

पिता उदास थे, उनकी आँखों में दर्द था। बाद में जितेंद्र को अपनी भूल का अहसास हुआ, पर कुछ कह नहीं पाया।

उस दिन के बाद पिता ने अपनी आदत बदल दी और दीवार का सहारा लेना बंद कर दिया। पर बुढ़ापा और दुर्बलता

एक–दूसरे के पर्याय होते हैं। बिना सहारे के बुढ़ापा अर्थहीन हो जाता है। एक दिन चलते समय पिता का संतुलन बिगड़ गया और वे जमीन पर गिर पड़े।

अस्पताल ले जाना पड़ा। पता चला, पिता के कूल्हे की हड्डी टूट गई थी। डॉक्टर ने कहा कि सर्जरी करनी पड़ेगी। मंजुला ने तुरंत हामी भर दी और डॉक्टर ने सर्जरी कर दी। पिता का शरीर इस झटके को सह नहीं पाया और कुछ ही दिनों में वे परलोकवासी हो गए।

जितेंद्र को आज भी उस बात का पछतावा था, काश पिता ने दीवार का सहारा न छोड़ा होता। उसे आज भी उनकी करुण आँखें नजर आती थीं और उसका मन पिता की मृत्यु के लिए स्वयं को ही दोषी मानता था।

कुछ समय बाद जितेंद्र ने घर पेंट कराने का सोचा। जब पेंटर आए तो उसका बेटा, जो अपने दादा से बहुत प्यार करता था, घर पर ही था। वह दीवार के उन हिस्सों को पेंट नहीं करने देना चाहता था, जहाँ उसके दादा की उँगलियों के निशान थे। पेंटर बहुत समझदार और रचनात्मक थे।

उन्होंने आश्वासन दिया कि वे उन निशानों को नहीं मिटाएँगे, बल्कि उनके चारों ओर सुंदर गोल डिजाइन बना देंगे ताकि वे दीवार की सजावट का हिस्सा बन जाएँ।

और ऐसा ही हुआ। धीरे–धीरे वे निशान उस घर की पहचान बन गए। जो भी घर आता, दीवार के उस हिस्से की तरफ इशारा किए बिना नहीं रह पाता। लोगों को क्या पता कि उस डिजाइन के पीछे एक कहानी छिपी हुई है।

आज का दिन। समय की रफ्तार ने जितेंद्र को भी बूढ़ा बना दिया था। आज चलते समय वह भी लड़खड़ा गया और उसे दीवार का सहारा लेना पड़ा। उसे याद आया, दीवार गंदी हो जाएगी। उसने हिम्मत जुटाई और बिना सहारे के ही चलने की कोशिश करना चाहा। उसका बेटा यह सब देख रहा था। वह तुरंत जितेंद्र के पास दौड़कर आया और बोला – ''पापा, आप दीवार का सहारा लीजिए, नहीं तो गिर जाएँगे।'' उसी समय उसकी पोती भी दौड़कर आई और बोली – ''दादा, आप मेरे कंधे का सहारा लीजिए।''

जितेंद्र की आँखों में आँसू आ गए। उसने सोचा – ''काश, मैंने भी अपने पिता के लिए यही किया होता... शायद वे कुछ और समय हमारे साथ रहते।''

जितेंद्र पिछली यादों से वर्तमान में लौट आया था। पोती ने अपनी पेंटिंग बुक में उसी दीवार की तस्वीर बनाई थी, जिस पर दादा की उँगलियों के निशान थे।

जितेंद्र धीरे से उठा और अपने कमरे में गया। पिता की तस्वीर के सामने खड़े होकर उनसे माफी माँगी। उस दिन वह बहुत रोया।

◆

रामायण काल से जुड़े बिहार के प्रमुख पर्यटन स्थल

✍ शंकरा नन्द झा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

रामचरितमानस को हिंदू धर्म का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। यह प्रत्येक भारतीय के जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। सनातन धर्म को मानने वाले लोगों की सदैव यह इच्छा रहती है कि वे प्रभु श्रीराम, माता जानकी तथा रामचरितमानस के अन्य पात्रों एवं घटनाओं से जुड़े स्थानों की यात्रा कर सकें। यद्यपि भगवान श्रीराम की जन्मस्थली होने के कारण **अयोध्या** निःसंदेह रामायण काल का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थल है, परंतु यदि हम रामचरितमानस का अध्ययन करें, तो यह पाएँगे कि प्रभु श्रीराम के जीवन की अधिकांश महत्त्वपूर्ण घटनाएँ बिहार में घटित हुई हैं अथवा बिहार से जुड़ी हुई हैं। प्रभु श्रीराम की शिक्षा–दीक्षा, विवाह, वनगमन, राक्षसों के वध आदि से जुड़े दर्जनों ऐसे स्थल हैं, जो वर्तमान में बिहार राज्य में अवस्थित हैं।

आइए, बिहार के विभिन्न जिलों में स्थित रामायण काल से जुड़े प्रमुख पर्यटन स्थलों के बारे में संक्षेप में जानते हैं–

1. सीतामढ़ी : जगत् जननी माता जानकी की प्राकट्यस्थली

रामायण काल के स्थलों की चर्चा हो और सीतामढ़ी का नाम न आए, यह असंभव है। इसे माता सीता की जन्मस्थली माना जाता है। सीतामढ़ी को मिथिला की आत्मा कहा जाता है। यहाँ के कण–कण में माता सीता का वास माना जाता है।

पुनौराधाम: पौराणिक कथा के अनुसार, मिथिला में एक बार भीषण अकाल पड़ा। ऋषियों के परामर्श पर राजा जनक ने स्वयं हल चलाने का निर्णय लिया। मान्यता है कि जब राजा जनक वर्षा के लिए हल चला रहे थे, तब इसी स्थान पर भूमि से एक पात्र (घड़ा) निकला, जिसमें माता सीता शिशु रूप में प्रकट हुई थीं। यहाँ स्थित जानकी मंदिर श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र है। सीतामढ़ी रेलवे स्टेशन

जानकी स्थान–ऊर्जा का केंद्र: यहाँ स्थित 'जानकी कुंड' वह स्थान है, जहाँ माता सीता को प्रथम स्नान कराया गया था। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, इस कुंड के जल में आज भी नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करने की शक्ति है।

हलेश्वर स्थान: मिथिला नरेश जनक ने पुत्रेष्टि यज्ञ के दौरान यहाँ भगवान शिव की स्थापना की थी। यह मंदिर प्राचीन वास्तुकला और धार्मिक महत्त्व का अनूठा संगम है।

पंथपाकर: विवाह के पश्चात् जब माता सीता की डोली जनकपुर से अयोध्या की ओर प्रस्थान कर रही थी, तब उन्होंने इसी स्थान पर एक पुराने पाकड़ वृक्ष के नीचे विश्राम किया था। आज भी वह प्राचीन वृक्ष श्रद्धा का पात्र बना हुआ

है।

2.बक्सरः श्रीराम की शिक्षा और ताड़का वध

बक्सर (प्राचीन नाम–सिद्धाश्रम) वह स्थान है, जहाँ भगवान राम और लक्ष्मण ने महर्षि विश्वामित्र से शस्त्र एवं शास्त्र की शिक्षा ग्रहण की थी।

रामरेखा घाटः कहा जाता है कि ताड़का राक्षसी के वध के पश्चात् भगवान राम ने इसी घाट पर गंगा स्नान किया था। आज भी यहाँ कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर विशाल मेले का आयोजन किया जाता है।

3. दरभंगाः अहिल्या स्थान

दरभंगा जिले का अहिल्या स्थान (अहियारी) रामायण सर्किट का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। महर्षि गौतम की पत्नी अहिल्या, जो एक श्राप के कारण पाषाण बन गई थीं। श्रीराम के पवित्र चरणों की धूल (चरण–रज) के स्पर्श से अहिल्या पत्थर रूप से मुक्त होकर पुनः नारी रूप में आ गईं और मोक्ष प्राप्त किया। यह स्थान अपनी विशिष्ट मिथिला कला और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है।

4. मधुबनीः फूलहर और गिरिजा स्थान

मिथिलांचल का मधुबनी जिला राम–सीता के प्रथम मिलन का साक्षी है।

फूलहरः यहाँ वह पुष्पवाटिका थी, जहाँ माता सीता गौरी पूजन के लिए आती थीं। इसी स्थान पर भगवान राम और माता सीता ने पहली बार एक–दूसरे को देखा था।

गिरिजा स्थानः यहाँ माता गौरी का वह प्राचीन मंदिर स्थित है, जहाँ वे विवाह से पूर्व पूजा–अर्चना करने जाती थीं।

5. प्रेतशिला और रामगया (गया)

यद्यपिगया 'पितृपक्ष' के लिए प्रसिद्ध है, किंतु इसका रामायण

काल से भी गहरा संबंध है।

राजा दशरथ का पिंडदान: वनवास के दौरान जब राम, सीता और लक्ष्मण गया पहुँचे, तब राजा दशरथ की आत्मा ने पिंडदान की माँग की। राम और लक्ष्मण सामग्री लेने नगर गए, किंतु पिंडदान का समय निकला जा रहा था। तब माता सीता ने फल्गु नदी, वट वृक्ष, केतकी पुष्प और गाय को साक्षी मानकर बालू के पिंड से महाराज दशरथ का तर्पण किया।

सीता का श्राप : जब राम लौटे, तो उन्होंने प्रमाण माँगा। वट वृक्ष को छोड़कर अन्य तीनों (फल्गु नदी, गाय और केतकी) ने झूठ बोल दिया। तब माता सीता ने फल्गु नदी को

अंतःसलिला होने का श्राप दिया, जो आज भी प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है।

6. गिद्धौर (जमुई)

जमुई जिले का गिद्धौर क्षेत्र जटायु से संबंधित माना जाता है।

जटायु–रावण युद्ध : लोककथाओं के अनुसार, जब रावण माता सीता का हरण कर ले जा रहा था, तब पक्षीराज जटायु ने इसी क्षेत्र में रावण को ललकारा था। रावण द्वारा पंख काटे जाने के बाद जटायु यहीं गिरे थे। यहाँ स्थित प्राचीन मंदिर और पहाड़ी श्रृंखला इस गाथा को जीवंत बनाती है।

7. मुंगेर : सीता कुंड

मुंगेर का रामायण से गहरा संबंध है। यहाँ स्थित 'सीता कुंड' के बारे में मान्यता है कि लंका विजय के पश्चात् अयोध्या

लौटते समय माता सीता ने यहाँ अपनी पवित्रता सिद्ध करने के लिए अग्नि परीक्षा दी थी। आश्चर्यजनक रूप से इस कुंड का जल सदैव गर्म रहता है, जबकि पास के अन्य कुंडों का जल ठंडा रहता है।

8. पश्चिम चंपारण : वाल्मीकि नगर

यह स्थल उत्तर–रामायण की घटनाओं का केंद्र है और गंडक (नारायणी) नदी के तट पर स्थित है।

वाल्मीकि आश्रम : यही वह स्थान है, जहाँ महर्षि वाल्मीकि ने आदि काव्य 'रामायण' की रचना की थी। माता सीता के त्याग के पश्चात् महर्षि वाल्मीकि ने उन्हें इसी आश्रम में पुत्री समान संरक्षण प्रदान किया।

अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा : यहीं लव और कुश ने भगवान राम के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को चुनौती देकर पकड़ लिया था।

लव–कुश की जन्मस्थली : वनवास के दौरान माता सीता ने इसी आश्रम में शरण ली थी और यहीं लव एवं कुश का जन्म हुआ था। यहाँ आज भी 'सीता की ओखली' नामक पत्थर विद्यमान है।

निष्कर्ष

बिहार के ये रामायण कालीन स्थल हमें त्रेतायुग की मर्यादा, प्रेम और त्याग की स्मृति कराते हैं। सरकार की 'स्वदेश दर्शन योजना' और 'रामायण सर्किट' के माध्यम से इन स्थलों का विकास किया जा रहा है, जिससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि हमारी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर भी सुरक्षित रहेगी। यदि आप भारतीय संस्कृति की जड़ों को निकट से महसूस करना चाहते हैं, तो बिहार के इन धार्मिक स्थलों की यात्रा अवश्य करें।

◆

ग़ज़ल

✍ रूपेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

इस तरह क्यों बिखर गए रिश्ते
क्यों नजर से उतर गए रिश्ते

कैसी मतलब की आँधियाँ आईं
आह! जड़ से उखड़ गए रिश्ते

ऐसे बेदर्द जहाँ में मुझको
छोड़ तन्हा किधर गए रिश्ते

जैसे उजड़ी हो माँग दुल्हन की
इस जहाँ से उजड़ गए रिश्ते

मेरी घायल वफ़ा तड़पती रही
फेर आंखें, गुजर गए रिश्ते

माँ पे खंजर चला रहे बेटे,
उफ ये मंजर, क्या मर गए रिश्ते

जब भी खुद से सवाल पूछा है,
तो ये देखा निखर गए रिश्ते

खिल उठे सहरा में भी फूल उधर,
प्यार लेकर जिधर गए रिश्ते

****
दुश्मनी लाख सही ख़त्म न कीजे रिश्ता
दिल मिले या न मिले हाथ मिलाते रहिए
****
– निदा फ़ाज़ली

OTP लीला एवं QR कोड महिमा

✍ सुभाष वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आजकल जमाना बहुत तेज हो गया है। हर जगह, हर चीज में भागमभाग हो गई है। अब लोगों को चीजें फटाफट चाहिए। पहले क्रिकेट में पाँच दिनों के टेस्ट मैच हुआ करते थे, लेकिन इस फटाफट संस्कृति ने पहले One Day मैच को जन्म दिया और अब तो T–20 का ही बोलबाला है। यह परिवर्तन केवल खेल में ही नहीं, बल्कि हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों में आ गया है। इसी क्रम में हमारे जीवन में एक अन्य चीज ने अपना स्थान बहुत गहराई से बना लिया है और वह है One Time Password अर्थात् OTP। Long Time Password के बोझ को हल्का करने, जमाने की रफ्तार को पकड़ने और फटाफट काम निपटाने में यह OTP जीवन की बहुत सारी गतिविधियों का केंद्र बन गया है। बस हमारे मोबाइल पर फ्लैश होते ही हमारे सारे काम बन जाते हैं।

कहने को तो यह One Time Password है, लेकिन अब लगता है कि यह लाइफटाइम हमारे साथ रहेगा। यह OTP अब हमारी पहचान का आधार है, अर्थात् हमारे अस्तित्व का आधार है।

अगर यह OTP न हो तो हमारी पहचान संकट में पड़ सकती है। वह ऐसे कि अगर हम आधार कार्ड से संबंधित कोई काम कर रहे हों और मोबाइल पर OTP आने में थोड़ी देर हो जाए, तो हमारा चंचल मन अपनी पहचान के प्रति सशंकित हो जाता है, और जैसे ही मोबाइल पर OTP प्रदर्शित होता है, हमारी जान में जान आ जाती है और हमें अपने अस्तित्व के होने का एक खुशनुमा एहसास होता है। तो ऐसी है हमारे OTP साहब की महिमा।

तो चलिए, अपनी पहचान तो सुनिश्चित हो गई, अब कुछ काम–काज की बात भी कर ली जाए। लेकिन यह क्या, कार्यालय में प्रवेश करते ही पता चला कि साथीगण चर्चा में व्यस्त हैं कि सुबह से प्रयास कर रहे हैं, लेकिन हमारे ई–ऑफिस का OTP नहीं आ रहा है। हमें बहुत सारे असाइनमेंट करने हैं और हमें समय–सीमा के अंदर अपने कार्य को अपने उच्चाधिकारी महोदय को प्रेषित करना है, ताकि काम का निष्पादन सही समय पर हो सके। लेकिन अब तो सारी बाजी हमारे OTP महोदय पर आ टिकी है और वे किशन–कन्हैया की तरह हमसे आँख–मिचौली कर रहे हैं। अब उच्चाधिकारी महोदय के समक्ष अपने को कर्तव्यनिष्ठ साबित करने का पूरा दारोमदार हमारे OTP साहब के ऊपर है और अब वे ही हमारी कर्मठता का प्रमाण–पत्र दे सकते हैं। तो इस तरह हमारी पहचान के साथ–साथ हमारे काम की गवाही भी इन्हीं OTP साहब के हाथों में है। हमारी कार्यालयीन गतिविधियों की जन्मकुंडली अर्थात् ई–एचआरएमएस के प्रवेशद्वार पर महाभारत के जयद्रथ की तरह OTP साहब द्वार रोककर खड़े हैं।

जैसे महाभारत में चक्रव्यूह में वही प्रवेश कर सकता था जिसे उसके भेदन का ज्ञान हो, अन्यथा वह कितना भी बड़ा वीर क्यों न हो, जयद्रथ उसे चक्रव्यूह के द्वार पर ही

रोक देता था, उसी प्रकार जब तक ई–एचआरएमएस को OTP का परिचय न दिया जाए, महाभारत के चक्रव्यूह की तरह ई–एचआरएमएस में हमारा प्रवेश निषेध है।

अब तो OTP साहब हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं। आज इनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमें कहीं भी आना–जाना हो तो ओला वाले भाई साहब हमारी तरफ देखने की भी जहमत नहीं उठाते और न ही हमसे आने–जाने के बारे में कुछ जानने की इच्छा रखते हैं। वे तो अपनी नज़रें मोबाइल पर गड़ाए रहते हैं और सिर्फ एक चीज़ पूछते हैं– OTP क्या है? बस फिर क्या, OTP बताते ही उनकी गाड़ी रफ्तार से बातें करते हुए कब हमें हमारे गंतव्य पर पहुँचा देती है, पता ही नहीं चलता। इंटरनेट बैंकिंग द्वारा किसी को पैसे भेजना हो तो बिना इनके यथोचित मान–सम्मान के हमारा काम नहीं होता और यदि हमने कहीं कोई कमी की या इनकी सही पहचान बताने में गलती करने की गुस्ताखी की, तो उनकी वक्र दृष्टि शनिदेव से भी घातक होती है और इनके द्वारा तत्काल न्याय किया जाता है और ये हमें मिलने वाली सुविधा से कुछ घंटों या कुछ दिनों के लिए वंचित करने का दंड भी देते हैं। इस प्रकार अपने प्रादुर्भाव से काफी कम दिनों के अंदर अपनी प्रचंड क्षमता और प्रभावशीलता के कारण OTP साहब ने हम सभी की जिंदगी में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

अब बात करते हैं QR कोड साहब की। इनकी संरचना ऐसी विचित्र है कि जलेबी भी टेढ़ी–मेढ़ी नहीं, बल्कि बहुत ही शरीफ लगती है। ये अपने आपको एक वर्गाकार आकृति में समेटे रहते हैं। इनकी संरचना कुछ ऐसी होती है, जैसे कि पुराने जमाने के ब्लैक एंड व्हाइट टीवी के प्रसारण में जब खराबी आती थी, तो स्क्रीन पर कुछ–कुछ अजीबोगरीब डिज़ाइन आता था। ऐसा लगता है कि दोनों कुंभ के मेले में बिछड़े हुए भाई हों। वैसे तो सारे QR कोड देखने में बिल्कुल एक जैसे लगते हैं, लेकिन हर एक QR कोड एक–दूसरे से उसी प्रकार अलग होते हैं, जैसे कि हर एक आदमी के अंगूठे का निशान एक–दूसरे से अलग होता है। इन QR कोड समुदाय में लक्ष्मी के प्रति असीम भक्ति है और लक्ष्मी की भी इन पर असीम कृपा है। जैसे ही हम अपने मोबाइल से QR कोड को स्कैन करते हैं, त्यों ही लक्ष्मी इनकी ओर त्वरित गति से आकृष्ट हो जाती हैं और हमारे अकाउंट से गंतव्य अकाउंट में प्रस्थान कर जाती हैं।

वस्तुतः कलयुग में धन के संबंध में यह माँ लक्ष्मी के वाहन उल्लू का काम करता है और लक्ष्मी के एक स्थान से दूसरे स्थान प्रस्थान हेतु उल्लू की ही तरह वाहन का कार्य करता है। QR कोड के अवतरण के बाद अब राशन वाला छुट्टे का बहाना बनाकर अपनी दुकान की चॉकलेट नहीं बेच सकता अथवा सब्जीवाला बिना जरूरत के हरी मिर्च और धनिया नहीं बेच सकता। अब जैसे ही ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है, हम लोग ब्रह्मास्त्र की तरह अपनी जेबों से मोबाइल निकालते हैं और बड़े ही गर्व से पूछते हैं कि स्कैनर कहाँ है।

स्कैन करते ही लक्ष्मी कलयुगी वाहन अर्थात् QR कोड पर सवार होकर सामने वाले के पास चली जाती हैं और स्पीकर से खुद सदी के महानायक श्री अमिताभ बच्चन अपनी दमदार आवाज में लक्ष्मीजी को भेजने के लिए हमारा आभार व्यक्त करते हैं।

अब इस QR कोड की व्यापकता इतनी बढ़ गई है कि मध्यम वर्गीय भिखारी और उच्च मध्यम वर्गीय भिखारी भी भीख माँगने के लिए इस तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं। अब यह कहकर हम लोग नहीं बच सकते कि छुट्टे नहीं हैं। अब रेलवे की टिकट हो या चिड़ियाघर का टिकट हो अथवा किसी सामान के बारे में जानकारी हासिल करनी हो, आँखें इसी वर्गाकार आकृति की चौहद्दी के भीतर अजीबोगरीब डिज़ाइन को ढूँढ़ती हैं और इन्हें देखते ही साँसों में साँस आ जाती है और हमारा मन–मस्तिष्क अपने इच्छित कार्य के समाधान के प्रति निश्चित हो जाता है। कोरोना महामारी में इन्होंने अपनी क्षमता से पूरी दुनिया को परिचित कराया और अपनी ताकत दिखाई। वास्तव में कोरोना से लड़ने में QR कोड साहब ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने बताया कि कैसे कोई तकनीक किसी महामारी से लड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

तो यह थी हमारे OTP साहब की लीला और हमारे QRकोड साहब की महिमा, जिन्होंने हमारे रोज़मर्रा के जीवन में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है और आज के समय में जगह–जगह हम इनसे लाभान्वित हो रहे हैं। धन्य हैं OTP साहब और OTP कोड साहब और धन्य है आपकी लीला और महिमा। ◆

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के रूप में पदोन्नति अधिकारियों को पदोन्नति की शुभकामनाएँ

क्रम संख्या	अधिकारियों एवं कर्मचारियों के नाम	क्रम संख्या	अधिकारियों एवं कर्मचारियों के नाम
01	राजीव कुमार झा	15	चितरंजन कुमार
02	राजीव कुमार नं०– 03	16	रंजीत कुमार – I
03	आलोक कुमार– I	17	मोनिया रानी
04	श्वेत निशा	18	अजिताभ कृष्ण
05	कुमार प्रज्ञामूर्ति	19	नलिन बेलोचन गुरिया
06	प्रमोद रंजन	20	प्रीतेश सौरभ
07	नित्येश प्रताप सिंह	21	सुभा चन्द्र झा
08	निशा किरण	22	कुंदन कुमार सिन्हा
09	अमरेन्द कुमार – I	23	ताबीस हैयात
10	राजीव कुमार – II	24	विकास कुमार नं०– 02
11	प्राण रंजन	25	उमेश कुमार सिंह
12	धीरज कुमार – I	26	रमेश कुमार नं०– 02
13	केशव किशोर		
14	आलोक कुमार – II		

ख्वाहिशों को मंजिल मिले

ख्वाहिशोंको मंजिल मिले,
जो दो घड़ी का वक्त मिले।
आधुनिकता के दौर में,
क्यों हैं अपने लब सिले ।।

है वक्त फिसलता रेत सा,
कुछ कुछ पिघलता बर्फ सा।
की थामने की कोशिश बड़ी,
पर वह भी निकला बेवफा ।।

कशमकश सी जिंदगी,
पल पल बदलती रूप है।
छांव की ख्वाहिश में देखा,
हर तरफ ही धूप है ।।

चेहरे पर मुस्कान का बोझ,
कहां गया यह स्वयं का ओज।
कुछ भुला दिया जो हमने तब,
हर दिन उसे अब रहें खोज ।।

जी हां, वह था सुकून हमारा
अपना सच्चा मीत वह प्यारा।
पर अस्त व्यस्त इस जीवन में,
उसने भी ले लिया किनारा ।।

तेरी राहों में पलकें मेरी बिछें,
हर दस्तक पर मुस्कान दिखे ।।

विराग छोड़ अब लग जा गले,
यूँ मेरी ख्वाहिशों को मंजिल मिले ।।

◆

✍ श्रीमती दिव्या नाथ
द्वारा श्री सुभाष वर्मा,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

और यूं तुम बड़े हुए

मेरी गोद में जब तुम आए,
ममता का सागर उमड़ पड़ा।
तेरे चांद से मुखड़े में तो ,
मम संसार सिमट रहा ।।

नजर उतारी नानी ने तब,
दिए नाना ने आशीष बड़े ।
रक्षा कवच मिला बड़ों का,
और यूं तुम हुए बड़े ।।

तेरी प्यारी सी सुंदर आंखें,
पूछ रही थीं प्रश्न कई ।
कहती थी मुझे छोड़कर ,
मां तुम जाना कहीं नहीं ।।

फिर आंखों के प्रश्न सभी,
चंचल मुख के साथ मिले ।
प्रश्नों की बौछार हुई तब ,
और यूं तुम हुए बड़े ।।

प्रथम निवाला तुझे खिलाया ,
हृदय खुशियों से भर गया ।
क्षुधा जो तेरी शांत हुई ,
मां का दिल भी तृप्त हुआ ।।

मां की गोद से जब तुम उतरे ,
लड़खड़ाए गिर पड़े ।
पापा ने फिर थामी उंगली ,
संग तुम्हारे खड़े हुए ।।

धीरे–धीरे मेरे बच्चे ,
तुम अपने पैरों पर हुए खड़े ।
पहला कदम बढ़ाया तुमने ,
और यूं तुम हुए बड़े ।।

बहन जो तेरी पीछे आई ,
देखा बचपन के रूप नए ।
फिर प्यारी मीठी बातों के,
संग उसके तुम बड़े हुए ।।

◆

ट्रम्प के टैरिफ ट्रैप से सबक: भारत का इंटरनेट भी भारतीय होना चाहिए

✍ दिलीप कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

अमेरिका जब भी छींकता है, तो बाकी दुनिया को जुकाम हो जाता है। ट्रम्प के टैरिफ ट्रैप ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था और तकनीक किस हद तक अमेरिकी मर्ज़ी पर निर्भर हैं। सवाल यह है कि क्या भारत, जो स्वयं को 'विश्वगुरु' और 'विकास का इंजन' कहता है, डिजिटल दुनिया में हमेशा अमेरिका का छात्र बनकर रहेगा?

आज हमारी ईमेल सेवाएँ गूगल पर निर्भर हैं, मीटिंग और दस्तावेज़ माइक्रोसॉफ्ट के सहारे चलते हैं, संवाद व्हाट्सएप पर होता है और हमारा डेटा अमेरिकी क्लाउड में संग्रहीत है। मान लीजिए, कल ट्रम्प (या कोई अन्य अमेरिकी राष्ट्रपति) गुस्से में भारत पर डिजिटल टैरिफ या प्रतिबंध लगा दे– तो क्या होगा? एक क्लिक में हमारे कार्यालय, विद्यालय, बैंक और सरकारी तंत्र ठप हो सकते हैं। यही असली डिजिटल गुलामी है।

चीन का सबक, भारत का संकोच

चीन ने वर्षों पहले 'ग्रेट फ़ायरवॉल' बनाकर यह स्पष्ट कर दिया कि उसका इंटरनेट उसी के नियंत्रण में रहेगा। वहाँ गूगल, फेसबुक और व्हाट्सएप प्रतिबंधित हैं, लेकिन उनके स्थान पर Baidu,WeChat.और Alibaba जैसे स्वदेशी विकल्प खड़े किए गए हैं। परिणामस्वरूप चीन किसी भी अमेरिकी टैरिफ या तकनीकी प्रतिबंध से भयभीत नहीं होता।

भारत ने भी कुछ प्रयास किए हैं–जैसे UPI, आधार, कोविन और ONDC–लेकिन इंटरनेट की वास्तविक रीढ़, जैसे मेलिंग सिस्टम, क्लाउड स्टोरेज और सर्च इंजन, आज भी विदेशी नियंत्रण में हैं।

क्लोज्ड नेटवर्क: डिजिटल स्वराज का मार्ग

भारत को चाहिए कि वह अपना एक सुरक्षित और स्वदेशी क्लोज्ड इंटरनेट नेटवर्क विकसित करे, जहाँ संवेदनशील सरकारी विभागों, सेना, न्यायपालिका और नागरिकों के लिए सुरक्षित डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म उपलब्ध हों। इसके अंतर्गत–

- अपना भारतीय ईमेल प्लेटफ़ॉर्म (जैसे 'भारतमेल'),
- स्वदेशी क्लाउड सेवा (जैसे 'आकाश'),
- और गूगल के विकल्प के रूप में एक भारतीय सर्च इंजन विकसित किया जाए।
- साथ ही ऐसे ऐप्स तैयार हों, जो भारतीय भाषाओं और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हों।

प्रारंभ में यह नेटवर्क केवल सरकार और रक्षा क्षेत्र तक सीमित रखा जाए, फिर धीरे–धीरे शिक्षा, बैंकिंग और उद्योग जगत में विस्तारित किया जाए और अंततः आम जनता तक पहुँचाया जाए। ताकि एक दिन हम गर्व से कह सकें कि हमारे इंटरनेट पर हमारी सरकार का कानून चलता है, न कि वॉशिंगटन या सिलिकॉन वैली के किसी सीईओ का आदेश।

डिजिटल संप्रभुता: 21वीं सदी की स्वतंत्रता

भारत को राजनीतिक स्वतंत्रता 1947 में मिली थी, लेकिन डिजिटल स्वतंत्रता आज भी अधूरी है। अमेरिकी ऐप्स और प्लेटफ़ॉर्म पर निर्भर भारत कभी भी 'टैरिफ ट्रैप' में फँस सकता है। यदि हम अब भी सचेत नहीं हुए, तो भविष्य में इतिहास हमें यही कहकर कोसेगा–

"भारत के पास 140 करोड़ नागरिक थे, लेकिन उनका इंटरनेट उनका अपना नहीं था।"

यही सही समय है कि भारत सरकार डिजिटल संप्रभुता के इस आंदोलन की शुरुआत करे, क्योंकि 21वीं सदी में राष्ट्रवाद की असली परीक्षा सीमाओं पर नहीं, बल्कि सर्वर और डेटा सेंटरों पर होती है। ◆

सपनों का टूटना

✍ ललन कुमार सिंह
सहायक पर्यवेक्षक

शायद मुझ जैसे लाखों लोग
मन में कोई–न–कोई सपना संजोए बैठे हैं।
हर नई सुबह सपने बुनते हैं,
और साँझ ढलते ही धूमिल–से हो जाते हैं
उनके सपने...

किसी को साधनों के अभाव का रोना है,
किसी के पास समय का न होना है।
किसी को पारिवारिक उलझनों की झेल है,
और कोई कहता है– सब भाग्य का खेल है।
क्या कभी साधनों की कमी ने किसी को
कलाम बनने से रोका है?

ये सब है मन का भ्रम, ये सब एक धोखा है।
जब मन में हो सच्ची लगन और करने की चाह,
तब मिल ही जाती है गर्दिश में भी राह।

बहुत दुखद होता है सपनों का टूटना,
पर अच्छा नहीं सफलता की राह से रूठना।
तो हो जाओ एक बार फिर से तैयार,
सपने कर रहे हैं आपका इंतज़ार...

****
****

उठो, जागो और तब तक मत रुको... जब तक तुम अपने लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर लेते
– स्वामी विवेकानंद

****
****

◆

बांका का मंदार हिलः प्रकृति की गोद में समाहित अध्यात्म और इतिहास

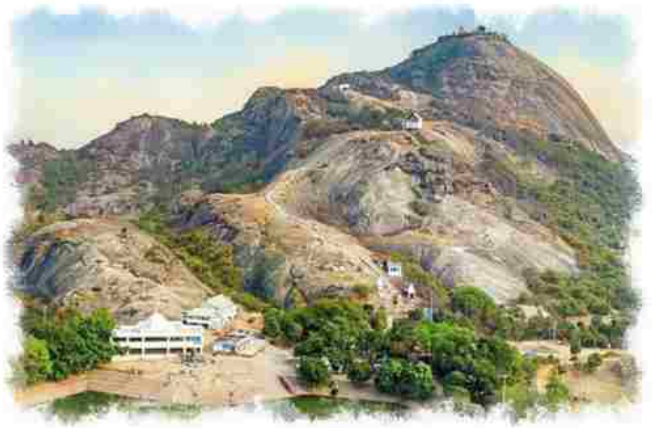

✍ अर्कजा आकृति
कनिष्ठ अनुवादक

बिहार अपने समृद्ध इतिहास तथा अध्यात्म के प्रति रुचि के लिए सदैव चर्चित रहा है। किंतु बिहार के कई पर्यटक स्थल आज भी वह पहचान प्राप्त नहीं कर पाए हैं, जिनके वे वास्तविक रूप से हकदार हैं। ऐसे ही कम प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में से एक है बिहार के बाँका ज़िले की पहचान – मंदार हिल। यह केवल एक पहाड़ी नहीं, बल्कि ऐसा भूखंड है, जिसकी मिट्टी में युगों पुराना इतिहास, अमर पौराणिक कथाएँ और गहन धार्मिक आस्था की सुगंध बसी हुई है। यह पर्वत, जिसे प्राचीन ग्रंथों में 'मंदराचल' कहा गया है, हिंदू और जैन – दोनों धर्मों के लिए पूजनीय है। शांत और सुरम्य वातावरण में स्थित मंदार हिल सदियों से तीर्थयात्रियों और प्रकृति–प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है।

पौराणिक आधार : समुद्र मंथन

मंदार हिल की सबसे बड़ी पहचान इसका क्षीर सागर के समुद्र मंथन की घटना से सीधा संबंध है। मान्यता है कि मंदार हिल वही धुरी था, जिसने देवताओं और असुरों के बीच हुए इस महान कार्य को संभव बनाया।

धर्मग्रंथों के अनुसार, जब जीवनदायिनी शक्तियाँ क्षीण होने लगीं, तब भगवान विष्णु की सलाह पर देवताओं और असुरों ने मिलकर क्षीर सागर का मंथन करने का निर्णय लिया। इस वृहद कार्य के लिए मंदार पर्वत को मथनी के रूप में चुना गया। महानाग वासुकी को रस्सी बनाकर, एक ओर देवता और दूसरी ओर असुर इस पर्वत को घुमाने लगे। मंथन के दौरान जब पर्वत डूबने लगा, तब भगवान विष्णु ने विशाल कछुए का रूप धारण कर, कूर्मावतार के रूप में, इस पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया।

इसी मंथन से हलाहल विष, चौदह बहुमूल्य रत्न तथा अंत में अमृत कलश की प्राप्ति हुई। इस प्रकार मंदार पर्वत ब्रह्मांड के एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण का साक्षी बना, जिससे यह साधारण पहाड़ी न रहकर आस्था का प्रमुख केंद्र बन गया।

आज भी पर्वत की चट्टानों पर ऐसी आकृतियाँ

दिखाई देती हैं, जिन्हें वासुकी नाग की लकीरों के रूप में माना जाता है, जो इस महागाथा का सजीव प्रमाण प्रतीत होती हैं।

जैन धर्म का सिद्ध क्षेत्र

मंदार हिल का महत्व केवल हिंदू धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जैन धर्म के अनुयायियों के लिए भी एक पवित्र सिद्ध क्षेत्र है। जैन परंपरा के अनुसार, बारहवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य ने इसी पर्वत पर दीक्षा ग्रहण की थी। उन्होंने यहाँ न केवल ज्ञान प्राप्त किया, बल्कि यहीं उन्हें निर्वाण (मोक्ष) की भी प्राप्ति हुई।

आज भी पर्वत के शिखर पर जैन मंदिर स्थापित हैं, जहाँ भगवान वासुपूज्य के चरण–चिह्न पूजे जाते हैं। यह स्थल जैन श्रद्धालुओं के लिए पंच–कल्याणक भूमि के रूप में विशेष महत्व रखता है। यहाँ वर्ष भर जैन तीर्थयात्री आते रहते हैं।

आकर्षण के केंद्र और प्राकृतिक छटा

लगभग 700 से 800 फीट ऊँचा मंदार पर्वत अपनी खड़ी चढ़ाई और ग्रेनाइट चट्टानों के साथ–साथ अनेक प्राकृतिक एवं मानव–निर्मित आकर्षणों को समेटे हुए है।

पापहरणी सरोवर

पर्वत की तलहटी में स्थित पापहरणी सरोवर यहाँ का प्रमुख आकर्षण है। मान्यता है कि इसके जल में स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है। सरोवर के मध्य एक छोटा टापूनुमा स्थल है, जहाँ भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित एक मंदिर स्थित है। शांत जल और चारों ओर फैली हरियाली आध्यात्मिक शांति का अनुभव कराती है। मकर संक्रांति के अवसर पर यहाँ स्नान के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है।

रोपवे सुविधा

पर्यटन और तीर्थयात्रा को सुगम बनाने के लिए यहाँ रोपवे की सुविधा भी उपलब्ध है। इसके माध्यम से यात्री कुछ ही मिनटों में पर्वत शिखर तक पहुँच जाते हैं, जहाँ से पापहरणी सरोवर और बाँका ज़िले के विस्तृत मैदानों का मनोहारी दृश्य दिखाई देता है।

ऐतिहासिक अवशेष और कुंड

पर्वत की चढ़ाई के मार्ग में अनेक गुफाएँ, मठ और कुंड स्थित हैं, जो प्राचीन काल में तपस्या और साधना के केंद्र रहे हैं। सीता कुंड, शंख कुंड और आकाशगंगा कुंड जैसे जलस्रोत यहाँ की भौगोलिक संरचना को रहस्यमय और आकर्षक बनाते हैं। पर्वत पर बिखरे प्राचीन मंदिरों के भग्नावशेष और पाषाण कला के अवशेष इसके पुरातात्विक महत्व को दर्शाते हैं, जो मुख्यतः उत्तर गुप्त काल (छठी से आठवीं शताब्दी) की कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

आस्था का उत्सव : मकर संक्रांति मेला

प्रत्येक वर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर मंदार हिल पर लगने वाला विशाल मेला इसकी विशिष्ट पहचान है। यह पर्व लगभग पंद्रह दिनों तक चलता है, जिसमें धार्मिक अनुष्ठानों के साथ–साथ पारंपरिक व्यापार, हस्तशिल्प और लोक संस्कृति का भव्य प्रदर्शन होता है। यह मेला बाँका और आसपास के ज़िलों के लिए सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इतिहास में महत्व

मंदार हिल केवल किंवदंतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक अभिलेखों में भी इसका उल्लेख मिलता है। पापहरणी सरोवर के समीप प्राप्त एक प्राचीन शिलालेख में उत्तर गुप्त राजा आदित्यसेन की रानी कोण देवी द्वारा इस सरोवर के निर्माण या जीर्णोद्धार का उल्लेख है। यह शिलालेख मंदार हिल की प्राचीनता और तत्कालीन शासक वर्ग के प्रभाव को प्रमाणित करता है।

यह क्षेत्र विभिन्न कालखंडों में कई राजवंशों के प्रभाव में रहा, जिसके कारण यहाँ हिंदू, जैन और स्थानीय कला शैलियों का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

निष्कर्ष

बाँका का मंदार हिल बिहार के उन चुनिंदा स्थलों में से एक है, जहाँ आस्था, इतिहास और प्रकृति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यह स्थल भारतीय संस्कृति की गहरी जड़ों और धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है, जहाँ दो प्रमुख धर्मों की आस्था एक ही पर्वत से जुड़ी हुई है। चाहे आप इतिहास के विद्यार्थी हों, धार्मिक तीर्थयात्री हों या प्रकृति–प्रेमी, मंदार हिल की यात्रा आपको एक अविस्मरणीय और प्रेरणादायक अनुभव प्रदान करेगी।

◆

आखिरी पत्ता - ओ. हेनरी

Last Leaf.... by O Henry का हिंदी अनुवाद

✍ अर्कजा आकृति
कनिष्ठ अनुवादक

स्यू और जॉन्सी–दो युवा कलाकार–एक पुराने मकान की तीसरी मंज़िल पर बने छोटे से फ़्लैट में साथ रहती थीं। नवंबर के महीने में जॉन्सी बहुत गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। उसे निमोनिया हो गया था। वह दिन भर अपने बिस्तर पर निश्चल पड़ी रहती और बस खिड़की से बाहर देखती रहती। उसकी सहेली स्यू भीतर ही भीतर चिंतित रहने लगी। उसने डॉक्टर को बुलवाया। डॉक्टर रोज़ आता, लेकिन जॉन्सी की हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा था।

एक दिन डॉक्टर ने स्यू को अलग ले जाकर पूछा, "क्या जॉन्सी किसी बात से चिंतित है?"

"नहीं," स्यू ने उत्तर दिया, "लेकिन आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं?"

डॉक्टर ने कहा, "ऐसा लगता है कि जॉन्सी ने यह ठान लिया है कि वह ठीक नहीं होगी। अगर उसकी जीने की चाह खत्म हो जाएगी, तो दवाइयाँ भी असर नहीं करेंगी।"

स्यू ने हर संभव प्रयास किया जिससे जॉन्सी का ध्यान आसपास की चीज़ों में लगे। वह उससे कपड़ों और फैशन की बातें करती, लेकिन जॉन्सी कोई ध्यान नहीं देती। वह चुपचाप अपने बिस्तर पर पड़ी रहती। स्यू अपना ड्रॉइंग–बोर्ड उठाकर जॉन्सी के कमरे में आ गई और चित्र बनाने लगी। जॉन्सी का ध्यान बीमारी से हटाने के लिए वह काम करते हुए सीटी भी बजा रही थी।

अचानक स्यू ने जॉन्सी को कुछ बुदबुदाते हुए सुना। वह तुरंत बिस्तर के पास पहुँची और देखा कि जॉन्सी उलटी गिनती कर रही थी। वह खिड़की से बाहर देखते हुए कह रही थी, "बारह!" थोड़ी देर बाद उसने धीरे से कहा,"ग्यारह... दस... नौ... आठ... सात।"

स्यू घबराकर खिड़की की ओर देखने लगी। उसने सामने की ईंटों वाली दीवार पर आधी चढ़ी हुई एक पुरानी आइवी बेल देखी। बाहर तेज़ हवा चल रही थी और बेल के पत्ते झड़ रहे थे।

"क्या हुआ?" स्यू ने पूछा।

"छह," जॉन्सी ने फुसफुसाकर कहा। "अब ये और तेज़ी से गिर रहे हैं। तीन दिन पहले लगभग सौ पत्ते थे। अब सिर्फ़ पाँच बचे हैं।"

"यह पतझड़ का मौसम है," स्यू ने कहा, "पत्तों का गिरना तो स्वाभाविक है।"

"जब आख़िरी पत्ता गिरेगा तो मैं भी मर जाऊँगी," जॉन्सी ने दृढ़ स्वर में कहा। "मुझे यह बात पिछले तीन दिनों से पता है।"

"अरे, यह सब बेकार की बातें हैं," स्यू बोली। "उन पुराने पत्तों का तुम्हारे ठीक होने से क्या लेना–देना? डॉक्टर को पूरा विश्वास है कि तुम ठीक हो जाओगी।"

जॉन्सी चुप रही। स्यू उसके लिए सूप लेकर आई।

"मुझे सूप नहीं चाहिए," जॉन्सी ने कहा। "मुझे भूख नहीं है...अब सिर्फ़ चार पत्ते बचे हुए हैं। मैं अंधेरे से पहले आख़िरी पत्ता गिरता हुआ देखना चाहती हूँ। फिर मैं हमेशा के लिए सो जाऊँगी।"

स्यू उसके पास बैठ गई, उसे चूमा और बोली, "तुम्हें कुछ नहीं होगा। मैं परदा नहीं हटा सकती, मुझे रोशनी चाहिए। मुझे यह पेंटिंग पूरी करनी है ताकि हमें कुछ पैसे मिल सकें। मेरी प्यारी दोस्त," उसने विनती की, "जब तक मैं चित्र बना रही हूँ, वादा करो कि तुम खिड़की की तरफ नहीं देखोगी।"

"ठीक है," जॉन्सी ने कहा। "जल्दी पेंटिंग पूरी करना, क्योंकि मैं आख़िरी पत्ता गिरते देखना चाहती हूँ। मैं इंतज़ार करते–करते थक गई हूँ। मुझे जीना नहीं है, इसलिए मुझे उन थके हुए पत्तों की तरह शांति से जाने दो।"

"सोने की कोशिश करो," स्यू ने कहा। "मुझे एक बूढ़े खनिक का चित्र बनाना है। मैं बेहरमन को मॉडल बनने के लिए बुला लाऊँगी।"

स्यू नीचे दौड़कर गई। वह साठ साल का चित्रकार, बेहरमन, भूतल पर रहता था। उसके जीवन का सपना एक महान कृति बनाना था, जो सपना ही रह गया था। स्यू ने अपनी सारी चिंताएँ बेहरमन से साझा की। उसने बताया कि जॉन्सी ने मान लिया है कि आख़िरी पत्ता गिरते ही उसकी मृत्यु हो जाएगी।

"क्या वह मूर्ख है?" बेहरमन बोला। "कोई इतनी बेवकूफ़ी कैसे कर सकता है?"

"उसे बहुत तेज़ बुखार है," स्यू ने कहा। "वह कुछ खा–पी ही नहीं रही और इस बात से मैं बहुत चिंतित हूँ।"

"मैं तुम्हारे साथ चलकर जॉन्सी को देखता हूँ," बेहरमन ने कहा।

वे दबे पाँव कमरे में गए। जॉन्सी सो रही थी। स्यू ने परदे लगा दिए और वे दूसरे कमरे में चले गए। स्यू ने खिड़की से बाहर झाँका। बेल पर सिर्फ़ एक पत्ता बचा था। तेज़ बारिश हो रही थी और बर्फ़ीली हवा चल रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह पत्ता किसी भी पल गिर जाएगा। बेहरमन चुपचाप अपने कमरे में लौट गया।

अगली सुबह जब जॉन्सी जागी तो उसने अपनी कमज़ोर आवाज़ में स्यू से परदे हटाने को कहा। स्यू घबराई हुई थी। उसने हिचकते हुए परदे हटाए।

"ओह!" स्यू चौंक पड़ी। "देखो, बेल पर अभी भी एक पत्ता लगा है। वह तो बिल्कुल हरा–भरा दिख रहा है। आँधी और तेज़ हवाओं के बावजूद भी वह नहीं गिरा।"

"मैंने रात भर हवा की आवाज़ सुनी," जॉन्सी बोली। "मुझे लगा था वह गिर जाएगा। देखना, आज ज़रूर गिरेगा, और तब मैं चली जाऊँगी।"

"तुम कहीं नहीं जा रही," स्यू ने दृढ़ता से कहा। "तुम्हें अपने दोस्तों के लिए जीना होगा। अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मेरा क्या होगा?"

जॉन्सी हल्के से मुस्कराई और उसने आँखें बंद कर लीं। हर घंटे बाद वह खिड़की की ओर देखती और वह अकेला पत्ता वहीं टिका रहता। शाम को फिर से तूफ़ान आया, लेकिन पत्ता नहीं हिला। जॉन्सी ने देर तक उसे देखने के बाद स्यू को बुलाया।

"मैं बिलकुल अच्छी नहीं हूँ," उसने कहा। "तुमने मेरी इतने अच्छे से देखभाल की और मैंने तुम्हारा साथ तक नहीं दिया। मैं तो बस उदास और निराश रही। उस आख़िरी पत्ते ने मुझे बता दिया है कि मैं कितनी गलत थी। अब मुझे समझ आ गया है कि मरने की इच्छा रखना पाप है।"

स्यू ने जॉन्सी को गले लगा लिया। फिर उसे गरम सूप

पिलाया और आईना दिया। जॉन्सी ने अपने बाल सँवारे और खिलखिलाकर हँसी।

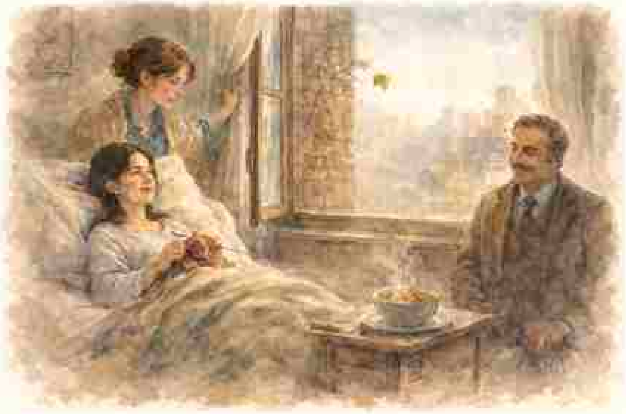

दोपहर में डॉक्टर आया और उसने जाँच के बाद स्यू से कहा, "अब जॉन्सी में जीने की इच्छा लौट आई है। मुझे पूरा भरोसा है कि वह जल्दी ही ठीक हो जाएगी। अब मुझे जल्दी नीचे बेहरमन को देखने जाना होगा। उसे भी निमोनिया है, लेकिन मुझे डर है कि उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है।"

अगली सुबह स्यू जॉन्सी के पास बैठी। उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसने कहा, "मुझे तुम्हें कुछ बताना है। आज सुबह श्री बेहरमन की निमोनिया से मृत्यु हो गई। वह केवल दो दिन से बीमार थे। पहले दिन चौकीदार को वे बिस्तर पर मिले थे। उनके कपड़े और जूते भीगे हुए थे और वे ठंड से काँप रहे थे। वे उस तूफ़ानी रात में बाहर गए थे।

उनके बिस्तर के पास एक सीढ़ी और जलती हुई लालटेन भी मिली। सीढ़ी के पास हरे और पीले रंग तथा कुछ ब्रश भी पड़े थे।"

"जॉन्सी, मेरी प्यारी," स्यू ने कहा, "खिड़की से बाहर देखो। उस आइवी के पत्ते को देखो। क्या तुमने कभी सोचा कि हवा चलने पर भी वह क्यों नहीं हिलता? वही बेहरमन की महान कृति है। उसने वह पत्ता उसी रात बनाया था, जिस रात आख़िरी पत्ता गिर गया था।"

◆

यथार्थ

✍ श्री अभिषेक
द्वारा: राधेश्याम प्रसाद,
सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

गिर चुकी है छत पुराने दिनों की,
नए दौर के चमकते शामियाने लगे हैं।

थोड़े पैसे ज़्यादा कमाने की ख़ातिर,
अपनी मिट्टी से लोग दूर जाने लगे हैं।

बड़े समझ बैठे हैं जो खुद को गुरूर में,
वे छोटों से नज़रें चुराने लगे हैं।

फ़र्ज़ की शमा से डर है जलने का जिनको,
वे हर नातों के दीये बुझाने लगे हैं।

जज़्बातों की छतरी भला वे क्यों खोलें,
मतलब की बारिश में जो नहाने लगे हैं।

देखकर चौराहों पर खिलौने बेचता "भविष्य",
सेठ गाड़ियों के शीशे चढ़ाने लगे हैं।

जन्म देकर भूल गए जो परवरिश का ज़िम्मा,
उनके बच्चे "रामू", "छोटू" कहलाने लगे हैं।

नारी–काया से निकल हो गए कुछ ऐसे मर्द,
कि औरतों पर ही जुल्म ढाने लगे हैं।

समय के साथ है बहुत कुछ बदलता,
सियासत में बजरंगी, श्रीराम आने लगे हैं।

ढलती उम्र में भी कहाँ देते हैं साथ बेटे,
बुजुर्ग हौसलों को लाठी बनाने लगे हैं।

◆

आईए भारत को सँवारें

✍ रवि प्रभात
कनिष्ठ अनुवादक

विश्व का कोई भी व्यक्ति, विद्वान, विद्यालय, विश्वविद्यालय, वैज्ञानिक, देश या महादेश यह दावा नहीं कर सकता कि भारत जैसा विविधतापूर्ण देश इस धरती पर दूसरा भी है। भारत के बारे में आप जितनी विविधता सोच सकते हैं, यह देश उससे कहीं अधिक विविधतापूर्ण है। न जाने कितनी भाषाएँ और उपभाषाएँ यहाँ बोली, समझी और लिखी जाती हैं। न जाने कितने पर्व और तीज–त्योहार यहाँ मनाए जाते हैं। न जाने यहाँ कितनी वेशभूषाएं हैं। विवाह के कितने विधि–विधान हैं। धर्म और पंथ भी यहाँ अनेक हैं और उन्हें मानने वालों की संख्या अनगिनत है। इसलिए विश्व में दूसरा ऐसा देश नहीं है जहाँ इतनी विविधता देखने को मिले।

भारत की संस्कृति, कला, भाषा और सभ्यता सदैव यहाँ आने वालों को आकर्षित करती रही है। लोग इस लोकतांत्रिक और प्राचीनतम देश की विविधता को देखने आते हैं कि यह हजारों वर्षों से कैसे कायम है और कैसे इसका किसी प्रकार का क्षरण नहीं हुआ है। यही बात लोगों को भारत के प्रति सदैव आकर्षित करती रही है। परंतु इतना कुछ होने के बावजूद हम इसे पर्यटन उद्योग में पूर्ण रूप से परिणत नहीं कर पाए हैं। हम जो विरासत पा चुके हैं, उससे पर्यटन के माध्यम से पर्याप्त लाभ अर्जित नहीं कर पा रहे हैं। विशेषज्ञों का स्पष्ट मत है कि भारत अपनी विविधतापूर्ण संस्कृति, विरासत, सभ्यता, कला, भाषा, बोली और वेशभूषा आदि का व्यावसायिक लाभ नहीं उठा पाता है। अपनी प्राकृतिक सुंदरता का जितना लाभ भारत को उठाना चाहिए, उतना वह उठा नहीं पाता है। जितने का हकदार वह है, उतना व्यावसायिक लाभ वह नहीं उठा पाता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि भारत अपनी विरासत, संस्कृति, सभ्यता और कला को व्यावसायिक रूप दे तो वह इस क्षेत्र में एक मजबूत सॉफ्ट पावर बन सकता है। विशेषज्ञों ने देखा है कि कैसे सिंगापुर, मालदीव, भूटान, जापान, चीन आदि अनेक देशों ने अपनी सभ्यता और संस्कृति की अप्रतिम खूबसूरती का भरपूर उपयोग कर पर्यटन जगत में अग्रणी सॉफ्ट पावर का दर्जा प्राप्त किया है। ये सभी देश अपनी प्राकृतिक सुंदरता को विश्व के कोने–कोने तक पहुँचा चुके हैं। इन प्रमुख एशियाई देशों ने अपनी संस्कृति, खूबसूरती, विरासत और पहचान को न केवल विश्व पटल तक पहुँचाया है, बल्कि यूरोपीय और अन्य विकसित देशों से लोहा भी मनवाया है। इसलिए विशेषज्ञों का मानना है कि हमारे पास जो कुछ है, हमने उसका पूरा उपयोग नहीं किया है। हम जितने के हकदार हैं, उतना व्यावसायिक लाभ हमें नहीं मिला है। अतः भारत को इस क्षेत्र में और अधिक काम करने की आवश्यकता है।

इस संदर्भ में एक छोटा सा उदाहरण देख सकते हैं। भारत बौद्ध धर्म की जन्मभूमि है। बौद्ध धर्म का उदय भारत के बिहार में हुआ था। किंतु इसके बावजूद भूटान, चीन, जापान जैसे अनेक देश, जो बौद्ध धर्म से संबंधित हैं, ने बौद्ध संस्कृति, सभ्यता और विरासत को वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध करने में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है, जबकि भारत नहीं। भारत भूमि पर उदय और समृद्ध हुए बौद्ध धर्म की संस्कृति, सभ्यता और विरासत का हम पर्याप्त व्यावसायिक लाभ नहीं उठा पाए हैं। बिहार राज्य तो इस मामले में और भी पिछड़ा हुआ है। बिहार में ही बौद्ध और जैन धर्म का उदय हुआ था, लेकिन यह राज्य बौद्ध धर्म की संस्कृति, सभ्यता और विरासत को विश्व पटल पर पहचान नहीं दिला पाया। हालाँकि बिहार सरकार अब इस दिशा में प्रयासरत दिख रही है। गया, वैशाली, राजगीर, पटना आदि में बौद्ध तथा जैन धर्म के पर्यटन स्थलों पर कार्य हो रहा है।

बहरहाल, हम देखते हैं कि बाद के वर्षों में जिन देशों ने बौद्ध धर्म को अपनाया, वे न केवल विकसित हुए बल्कि बौद्ध धर्म और उसकी सभ्यता को ऊँचाइयों तक भी पहुँचाया। इससे समझा जा सकता है कि हम अपनी ही विरासत को विश्व पटल तक नहीं पहुँचा पा रहे हैं। अन्य धर्मों की विरासत, संस्कृति, सभ्यता और कला की स्थिति भी कमोबेश ऐसी ही है। इसका कारण यही है कि हम इसे पर्यटन उद्योग के रूप में विकसित करने में असमर्थ रहे हैं, जबकि भारत के प्रति

आकर्षण का मुख्य कारण यही विविधता है। इसलिए भारत में पर्यटन विकास से संबंधित हर प्रकार के कार्य और कार्यक्रम शुरू करने चाहिए ताकि भारत उस योग्य स्थान को प्राप्त कर सके जिसका वह हकदार है। उसकी प्राकृतिक सुंदरता, सभ्यता, कला और संस्कृति का सदुपयोग हो और भारत विश्व के पर्यटन जगत में अग्रणी बने।

देखा जाए तो किसी भी देश की सांस्कृतिक विरासत को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

1. पुरातन स्थापत्य विरासत (बिल्ट हेरिटेज)रू इसमें इमारतें और स्थापत्य कला आती हैं, जैसे कुतुब मीनार, ताजमहल, हिंदू, जैन व बौद्ध धर्म के मंदिर व स्तूप आदि।
2. प्राकृतिक परिवेश (नेचुरल एनवायरनमेंट)– जैसे ग्रामीण परिदृश्य, तटरेखाएँ, पर्वत श्रृंखलाएँ (जैसे हिमालय)।
3. कलात्मक विरासत– जैसे पुस्तकें, दस्तावेज, ग्रंथ, चित्रकला (जैसे अजंता की गुफाओं की चित्रकारी)।

इन तीनों को ही मूर्त विरासत कहा जाता है और यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भारत इन तीनों ही प्रकार की विरासतों में धनी एवं अग्रणी है। परंतु हम इनमें से केवल कुछ को ही विश्व स्तर तक पहुँचा पाए हैं। पुरातन स्थापत्य में हम केवल ताजमहल, कुतुब मीनार आदि को ही प्रमुखता दे पाए हैं। कलात्मक विरासत में भी ताजमहल की चित्रकारी तक ही सीमित रहे हैं। इसके अलावा बहुत कुछ है जिसे विश्व पटल तक पहुँचाने की आवश्यकता है।

इन सबको देखते हुए केंद्र सरकार ने भारत में पर्यटन विकास के लिए कई स्तरों पर कार्य किया है। इस दिशा में सरकार द्वारा उठाए गए कुछ प्रमुख कदम हैं–

- ➢ 17आइकॉनिक टूरिस्ट साइट्स का विकास, जिससे भारत की सॉफ्ट पावर बढ़ेगी और निजी निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा।
- ➢ 'अपनी धरोहर, अपनी पहचान योजना'(27 सितंबर 2017 को आरंभ)।
- ➢ 'हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट एंड ऑग्मेंटेशन योजना' (HRIDAY)।
- ➢ 'प्रसाद' व 'स्वदेश दर्शन' योजनाएँ, जिनमें हिमालय, पूर्वोत्तर, रामायण सर्किट सहित15 सर्किट शामिल हैं।

भारत सरकार के साथ–साथ अनेक राज्य सरकारें भी अब अपनी मूर्त व अमूर्त विरासत को संरक्षित, विकसित और विश्व पटल तक पहुँचाने के प्रयास में जुटी हैं। वे जानते हैं कि पर्यटन भविष्य का सबसे बड़ा उद्योग है और भारत के कोने–कोने में अद्भुत विरासत बिखरी पड़ी है।

सरकार के इन प्रयासों का ही परिणाम है कि जुलाई 2019 में जयपुर को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल का दर्जा मिला। यूनेस्को विश्व धरोहर समिति के 43वें सत्र के दौरान जयपुर को 'वर्ल्ड हेरिटेज सिटी' घोषित किया गया। यह भारत के लिए पर्यटन क्षेत्र में एक अभूतपूर्व उपलब्धि है।

केवल सरकारी प्रयासों से ही सब कुछ नहीं होगा। देश के नागरिकों का भी यह कर्तव्य है कि वे इस कार्य में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएँ। अतः हमें निम्नलिखित कर्तव्यों का पालन करना चाहिए –

1. **प्रदूषणमुक्त वातावरण का निर्माण**– ताजमहल जैसे विश्व धरोहर स्थल प्रदूषण के कारण क्षति ग्रस्त हो रहे हैं। मंदिरों, देवालयों पर भी प्रदूषण का प्रभाव पडा है। हमें सभी धरोहर स्थलों के पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए।
2. **मानसिकता में बदलाव**–पर्यटन को केवल मनोरंजन न मानकर एक ऐसे उद्योग के रूप में देखना चाहिए जो स्थानीय रोजगार व स्वरोजगार बढ़ाता है, क्षेत्रीय विकास लाता है और देश की समृद्धि में योगदान देता है। हमें सिविक सेंस बढ़ाना होगा।
3. **सभी धर्मों के प्रति समभाव**–भारत की पहचान धर्मनिरपेक्षता है। हमें सभी धर्मों से जुड़ी विरासत, संस्कृति और सभ्यता का समान रूप से सम्मान और संरक्षण करना चाहिए। हम सबसे पहले भारतीय हैं। उसके बाद ही अपने–अपने धर्म के है। हमें धार्मिक संकीर्णता छोड़नी होगी।
4. सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता–हमें सार्वजनिक स्थानों, नदियों (जैसे गंगा) और पर्यटन स्थलों को स्वच्छ रखने की आदत विकसित करनी होगी। अपनी ही विरासत को हम गंदगी से नष्ट नहीं होने देना चाहिए। सार्वजनिक व्यवस्था का सम्मान करना होगा।

अतः अब हमें इस दिशा में और देरी नहीं करनी चाहिए। आईए, मिलकर भारत को सँवारें।

अंत में, अपनी इस धरती की खूबसूरती के लिए कुछ पंक्तियाँ–

तेरी खूबसूरती की तारीफ में क्या लिखूँ,

कुछ खूबसूरत शब्दों की अभी तलाश है मुझे!

◆

अपना सीएजी (गीत)

✍ कुमार शैलेन्द्र चन्द
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत की है एक संस्था नाम है जिसका सीएजी
लेखा–जोखा रखना और ऑडिट करना काम है इसकी
बात 1860 की है, बहुत ही निराली,
उसी समय शुरू हुई थी सीएजी की कहानी।

सबसे पहले सीएजी, सर एडवर्ड ड्रमंड कहलाए,
और सबसे पहले भारतीय सीएजी, नरहरी सर बन आए।
लेखा–जोखा रखना और ऑडिट करना बतायें।

डॉ. सी. वी. रमन भी इसी संस्था की पहचान थे,
वैज्ञानिक के रूप में दुनिया में महान थे।
लेखा–जोखा रखना और ऑडिट की जान थे।
भारत की है एक संस्था, नाम है जिसका सीएजी,
लेखा–जोखा रखना और ऑडिट करना काम है जी।

राजनीति में भी इस संस्था का रहा है बड़ा योगदान,
प्रणब मुखर्जी जैसे रत्न रहे हैं इसकी शान।
लेखा–जोखा रखना और ऑडिट का दिया ज्ञान।
भारत की है एक संस्था, नाम है जिसका सीएजी
लेखा–जोखा रखना और ऑडिट करना काम है जी।

शासन हो या प्रशासन, किसी का है नहीं भय इसे,
निर्भीक होकर काम है करता, अपना रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपता।
भारत की है एक संस्था, नाम है जिसका सीएजी,
लेखा–जोखा रखना और ऑडिट करना काम है जी।

स्वतंत्र भारत के प्रथम सीएजी
श्री नरहरिराव

◆

दीपावली की वैश्विक स्वीकार्यता

✍ **अमित कुमार**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अंधकार पर प्रकाश की विजय के पर्व दीपावली को संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की सांस्कृतिक विरासत की सूची में सम्मिलित किया गया है। भारत के लिए यह एक उपलब्धि है। अभी तक यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में भारत की 15 धरोहरें शामिल थीं। इनमें कुंभ मेला, गुजरात का गरबा नृत्य, कोलकाता की दुर्गा पूजा, योग, वेद–पाठ, रामलीला, छउ नृत्य, नवरोज त्योहार इत्यादि प्रमुख हैं। दीपावली को 16वीं अमूर्त विरासत के रूप में यूनेस्को की सूची में जोड़ा गया है। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराएँ महज अतीत का एक प्रमाण मात्र ही नहीं हैं, अपितु वे पूर्णतया जीवंत भी हैं और प्रत्येक भारतीय के जीवन के सूक्ष्म अनुभवों में धड़कती हैं।

भारत अपने त्योहारों, रीति–रिवाजों, लोककथाओं, संगीत, नृत्य, खान–पान और सामाजिक व्यवहारों के माध्यम से केवल अपना अतीत ही नहीं सँभालता, बल्कि अपनी आत्मा को भी जीवंत रखता है। जब भी कोई सांस्कृतिक परंपरा वैश्विक पटल पर प्रतिष्ठित होती है, तो उसके अर्थ एवं भाव स्थानीयता से ऊपर उठकर सार्वभौमिकता की ओर बढ़ जाते हैं। यूनेस्को ने दीपावली को न केवल एक त्योहार के रूप में देखा, बल्कि एक सांस्कृतिक दर्शन के रूप में भी पहचाना है, जो अनंत काल से हमारे समाज का अभिन्न अंग बना हुआ है। भारत का सांस्कृतिक तंत्र जितना विशाल है, उतना ही जटिल भी है। यहाँ पग–पग पर भाषा, भोजन की शैली, पहनावा, लोकगीतों का सुर, त्योहारों की परंपरा, आचार–विचार आदि भिन्न–भिन्न रूप ग्रहण करते हुए सामने आते हैं, किंतु इन तमाम विविधताओं को एक सूत्र में बाँधने का कारण विविधता में विद्यमान एकता है। दीपावली का त्योहार इस एकता–सूत्र का सर्वोत्तम उदाहरण है। देश के विभिन्न हिस्सों में हर जगह दीपों की संख्या भले ही अलग–अलग हो, परंतु प्रकाश का अर्थ, स्वरूप एवं इसमें निहित संदेश एक ही रहता है।

दीपावली का यूनेस्को की सूची में शामिल होना महज एक सांस्कृतिक उपलब्धि नहीं है, बल्कि भारत के लिए एक व्यापक अवसर भी है। यह अवसर है–सांस्कृतिक संवाद को विस्तार देने का, वैश्विक प्रभाव बढ़ाने का और आने वाली पीढ़ियों में सांस्कृतिक आत्मविश्वास जगाने का। यदि हम इस अवसर का उपयोग सांस्कृतिक संवर्धन, आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक सामंजस्य के रूप में कर सकें, तो यह और भी बेहतर होगा, क्योंकि भविष्य में दीपावली के अवसर पर विदेशी पर्यटक भी भारत की ओर भ्रमण हेतु उन्मुख होंगे। इससे हमारे सांस्कृतिक एवं परंपरागत उद्योग तथा कौशल विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सक्षम हो सकेंगे। विश्व का कोई भी देश हो, वहाँ भारतीयता किसी न किसी रूप में अवश्य मौजूद है। दुनिया भर में फैले भारतवंशी दीपावली को उस स्तर की वैश्विक स्वीकार्यता दिला सकते हैं, जैसी क्रिसमस अथवा नववर्ष को मिली हुई है। भारतीय दूतावासों एवं उच्चायोगों को भी इस दिशा में पहल करनी होगी।

वैश्विक स्वीकार्यता का अर्थ केवल अंतरराष्ट्रीय सम्मान अर्जित कर लेना भर ही नहीं है। इस स्वीकार्यता के साथ जिम्मेदारियाँ भी समानुपात में बढ़ती हैं। वैश्वीकरण की दौड़ में काफी कुछ बाज़ार की चमक में अपना मूल खो देता है। लिहाज़ा दीपावली के मूल तत्वों को सुरक्षित रखना आज और भी आवश्यक एवं चुनौतीपूर्ण हो गया है। यह त्योहार मानव सभ्यता की गहरी सांस्कृतिक परतों में अध्ययन का विषय बनना चाहिए। आज पश्चिमी जगत में बहुत–सी सांस्कृतिक परंपराएँ महज उत्सवों की औपचारिकताओं में सिमट गई हैं। इसके विपरीत भारत में लोक संस्कृति आज भी जीवित है। यह जीवंतता ही भारत को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध एवं अनूठा बनाती है। विश्व राजनीति में सॉफ्ट पावर ही वह शक्ति है, जो सांस्कृतिक आकर्षण और नैतिक प्रभाव के माध्यम से देशों को जोड़ती है। जब कोई राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाता है, तो उसकी वैश्विक छवि अधिक सकारात्मक बनती है और उसकी अंतरराष्ट्रीय भूमिका भी अधिक प्रभावी हो जाती है। पर्यटन, सांस्कृतिक उद्योग, हस्तशिल्प, पारंपरिक कला, लोकनृत्य, पारंपरिक

खान–पान–इन सभी क्षेत्रों को वैश्विक मंच मिलता है।

आज जब कई सभ्यताएँ संघर्षों के दौर से गुजर रही हैं, तब एक ऐसा सांस्कृतिक संदेश, जो प्रकाश, उत्साह, एकता और शुभता की बात करता है, वह मानवता के लिए दिशासूचक बन सकता है। यूनेस्को का यह निर्णय भारत को एक नवीन जिम्मेदारी भी सौंपता है और वह है–अपनी संस्कृति का संरक्षण, संवर्धन और पुनर्जागरण। आधुनिक पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ना, त्योहारों को उनके वास्तविक अर्थ के साथ जीना और विदेशी प्रभावों एवं बाज़ारीकरण के बीच अपनी सांस्कृतिक आत्मा को सुरक्षित रखना– इन उद्देश्यों की प्राप्ति हमारा लक्ष्य होना चाहिए। साथ ही दीपावली की वैश्विक मान्यता हमें यह भी स्मरण कराती है कि हमारी सांस्कृतिक परंपराएँ केवल धार्मिक एवं सामाजिक व्यवहार मात्र नहीं हैं, बल्कि वे हमारे जीवन के अर्थ को समृद्ध करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं।

◆

सेवानिवृत्त

वित्तीय वर्ष 2025–26 में सेवानिवृत अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची: (1.04.2025 से 31.10.2025 तक)

क्रम सं.	नाम सर्व श्री	पदनाम	सेवानिवृति की तिथि
1.	ध्रुव देव सिंह	पर्यवेक्षक	30.11.2025
2.	विजय कृष्णा	लेखापरीक्षक	31.11.2025
3.	अनिल कुमार नं– 01	व.ले.प.अ.	31.01.2026
4.	प्रीतम रानी	व.ले.प.	31.01.2026
5.	रामजीवन प्रसाद राय	व.ले.प.अ.	28.02.2026
6.	अशोक कुमार नं– 01	सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2026

शोक संदेश

क्रम सं.	नाम	पदनाम	निधन की तिथि
1.	स्व. मनीष कुमार	पूर्व वरिष्ठ लेखापरीक्षक	19.01.2026

पिता

✍ सौरभ रॉय
द्वारा–गौरव कुमार महतो,
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

मुकर्रर हुई थी मेरी ज़िंदगी, उस दिन जब उसने खुदा के सामने मेरी लकीरें खींचीं।
बंद हथेली, मुट्ठी से, उसने मेरे बचपन से लेकर जवानी तक के पहियों को खींचा।
मैं उठ खड़ा हुआ, अपने खून की जिम्मेदारियों को लेकर,
"कुछ तो बचा ले खुद के लिए, तू ही है उस बाग का मालिक; जिस खून से तू बना है,
उसी से तूने अपनी कलियाँ सींची।"
रोज़ सवेरे उठकर, मस्तक पर जलता है सूरज की तरह,
इस आशा में कि एक दिन प्रकाश का पुंज बन, मेरा रक्त भी दमकेगा– चंद्र प्रभा की भांति।
अपने जीवन को उसने टुकड़ों में बाँटा,
अगर मैंने अपने हिस्से की रोटी ज्यादा मांगी भी, कभी गुस्से से डांटा नहीं।
अरे, उसने अपनी पूरी ज़िंदगी को भी हिस्सों में बाँट दिया,
दिल में चाहे लाखों ग़म और मजबूरियाँ हों, मेरी माँ को खुश रखने का वादा निभाया।
कैसे भूल जाऊँ उस गरीबी के दहलीज को,
जहाँ से उसने मुझे खींचा, अपने हिस्से की हर ज़िंदगी उस दहलीज पर तौलकर,
मेरे भविष्य को उसी गरीबी के दामन से छीना।
अब गर्व महसूस होता है, उस पिता का पुत्र होने का,
जब मेरी चमकती कमीज़ से फूलों की खुशबू आती है।
अच्छा लगता है, कुछ काबिल दोस्त "हेलो" से लेकर "बाय" तक बुलाते हैं।
ये देखकर पिताजी भी मुस्कुराते हैं,
उन्हें लगता है, "काबिल है मेरा पुत्र।"
शायद मेरे कर्मों का यही फल है कि अब
मेरे गंदे हाथों और बदन से भी चंदन की खुशबू आती है।
पितृगुण सदा निरामय गुण होई।
हे श्याम! तुम जैसे कभी पितृ न होई।
(गीता से संकलित)

◆

शेयर से संबधित सामान्य जानकारी

✍ श्री सतीश चन्द्रा
सेवानिवृत्त सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

परिभाषा के तौर पर– "किसी कंपनी की कुल पूंजी को कई समान हिस्सों में बाँट देने पर जो पूंजी का सबसे छोटा हिस्सा बनता है, उस हिस्से को शेयर कहा जाता है।''

कंपनी को पूँजी दो तरीकों से मिलती है– कर्ज (debt) और इक्विटी (equity)। कर्ज में ऋणदाता को ब्याज और मूलधन की वापसी मिलती है; इक्विटी में निवेशक मालिक बनकर लाभ–हानि में भागीदार होते हैं। कंपनियाँ इक्विटी जुटाने के लिए IPO (Initial Public Offering) निकालती हैं; IPO के बाद उनके शेयर सूचीबद्ध होकर द्वितीयक बाजार (secondary market)में खरीदे–बेचे जाते हैं।इस प्रकार स्टॉक मार्केट में सूचीबद्ध होने के कारण कंपनी की ब्रांड वैल्यू में इजाफा होता है और साथ ही पूंजी भी प्राप्त हो जाती है।

शेयर के फायदे

कंपनी के शेयर से कई लाभ प्राप्त होते हैं, जिनमें मुख्य लाभ निम्नलिखित हैं :–

1. लाभांश (Dividend) – यदि किसी कंपनी के शेयर आपके पास हैं और कंपनी अच्छा मुनाफा कमा रही है तो कंपनी आपको डिविडेंड का भुगतान कर सकती है। यह कि शेयरधारकों को डिविडेंड दिया जाए या नहीं – यह पूर्णतः कंपनी के प्रबंधन पर निर्भर करता है। परंतु यदि आप ऐसी कंपनी में निवेश कर रहे हैं जो निरंतर रूप से हानि कर रही है, तो संभवतः आपको उस कंपनी से डिविडेंड नहीं मिलेगा।

2. शेयर वैल्यू ग्रोथ (Share value growth)– यदि आपके द्वारा खरीदे गए शेयर की कीमत में इजाफा होता है तो आप उसे बेचकर लाभ कमा सकते हैं। यदि कंपनी का व्यवसाय अच्छा चल रहा है और कंपनी लगातार बढ़ रही है तो धीरे–धीरे कंपनी के शेयर की कीमत में भी वृद्धि होगी। उदाहरण के लिए – मान लीजिए ABC लिमिटेड का एक शेयर₹10 में खरीदा गया। कुछ समय बाद उस शेयर की कीमत ₹12 हो गई। यदि आपने उस समय वह शेयर बेच दिया तो आपको प्रति शेयर ₹2का लाभ हुआ।

3. राइट शेयर और बोनस शेयर– कभी–कभी कंपनी बोनस शेयर या राइट इश्यू जारी करती है, जिससे आपके शेयरों की संख्या में इजाफा हो सकता है।

शेयर के प्रकार (Types of Shares)

शेयर मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं:–

1. इक्विटी शेयर (Equity Shares) – को साधारण अंश (Ordinary shares) भी कहा जाता है। किसी कंपनी द्वारा जारी किए गए अधिकांश शेयर इक्विटी शेयर ही होते हैं। ये शेयर स्टॉक मार्केट में से सेकेंडरी मार्केट में सक्रिय रूप से ट्रेड होते हैं। इक्विटी शेयर होल्डर्स को कंपनी की मीटिंग में मतदान का अधिकार (voting right) होता है। साथ ही इन्हें डिविडेंड प्राप्त करने का भी अधिकार होता है। साधारण शेयरधारकों को प्रेफरेंस शेयरधारकों को डिविडेंड दिए जाने के बाद ही डिविडेंड मिलता है। इस प्रकार के शेयर होल्डर को कंपनी के दिवालिया हो जाने की स्थिति में कुछ भी क्लेम करने का अधिकार नहीं होता।

2. प्रेफरेंस शेयर (Preference Share) – जैसा कि नाम से स्पष्ट है, प्रेफरेंस शेयरधारकों को साधारण शेयरधारकों की तुलना में प्राथमिकता दी जाती है। प्रेफरेंस शेयरधारकों को सामान्यतः कंपनी की मीटिंग में मतदान का अधिकार प्राप्त नहीं होता। प्रेफरेंस शेयरधारकों को डिविडेंड देने में प्राथमिकता दी जाती है और उन्हें मिलने वाला लाभांश अक्सर निश्चित रहता है। कंपनी बंद होने की स्थिति में प्रेफरेंस शेयरधारकों को भुगतान प्राथमिकता के अनुसार पहले किया जाता है।

प्रेफरेंस शेयर निम्नलिखित तीन प्रकार के हो सकते हैं:–

(1)Cumulative Preference Share– इस प्रकार के शेयर होल्डर्स को यदि किसी वर्ष डिविडेंड का भुगतान न किया जाए तो वह बकाया (एरियर) के रूप में अगले वर्षों में प्राप्त करने का अधिकार रखते हैं।

(2) Non–cumulative Preference Share– इस प्रकार के शेयर होल्डर्स को केवल उसी वर्ष में डिविडेंड का भुगतान होता है जब कंपनी ने लाभ कमाया होय इन्हें किसी भी तरह का एरियर प्राप्त करने का अधिकार नहीं होता।

(3) Convertible Preference Share– इस प्रकार के शेयर होल्डर्स के पास अधिकार होता है कि वे अपने प्रेफरेंस शेयरों को भविष्य में इक्विटी शेयरों में परिवर्तित (convert) करवा सकते हैं।

3. DVR (Differential Voting Rights) Share– डीवीआर (Differential Voting Rights) शेयरधारक उन शेयरधारकों को कहते हैं जिनके मतदान अधिकार इक्विटी शेयरधारकों की तुलना में कम होते हैं। कम मतदान अधिकार के बदले में कंपनी ऐसे डीवीआर शेयरधारकों को प्रोत्साहन के रूप में उच्च डिविडेंड दे सकती है। मतदान अधिकार कम होने के कारण इन शेयर्स की कीमत भी कम होती है।

◆

भारतीय शहरीकरण मॉडल-एक विफलता या एक उपलब्धि?

✍ अनुप्रिया सिंह
द्वारा– अमित कुमार

शहरीकरण को आमतौर पर रिक्त या विरल आबादी वाली ग्रामीण भूमि को घनी आबादी वाले क्षेत्रों में बदलने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है।यह मुख्य रूप से बेहतर आजीविका के अवसरों, जैसे नौकरी–व्यवसाय, शिक्षा सुविधाएँ और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर लोगों के प्रवास से उत्पन्न होता है। इसके परिणामस्वरूप अक्सर वनोन्मूलन होता है, जिससे वायु प्रदूषण में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। साथ ही, इससे जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण जैसी समस्याओं में भी अवांछित वृद्धि होती है। इन समस्याओं का एक प्रमुख कारण अनियोजित क्षेत्रीय विकास भी है।

शहरी क्षेत्रों के सुचारु विकास के लिए भारत ने कई शहरीकरण मॉडल अपनाए हैं, जैसे प्राइमेट सिटी अर्बनाइजेशन, जो कर्नाटक के बेंगलुरु में प्रमुख रूप से प्रभावी है, तथा दूसरा डिस्पर्स्ड अर्बनाइजेशन, जो तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में देखा जा सकता है। सरकारी पहलों में स्मार्ट सिटीज़ मिशन तथा जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीकरण मिशन जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाएँ भी शामिल हैं। भारत का तीव्र शहरीकरण आर्थिक विकास को गति देने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। वर्तमान में शहर देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 60% का योगदान करते हैं, जबकि वे देश के कुल भू–भाग का केवल 3% हिस्सा ही घेरते हैं।

भारत में शहरीकरण ने आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुंबई, दिल्ली, बेंगलुरु और हैदराबाद जैसे प्रमुख शहर वित्त, आईटी, विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों के केंद्र बन गए हैं। बेंगलुरु, पुणे और गुरुग्राम जैसे आईटी हब के विकास ने भारत को वैश्विक आउटसोर्सिंग और सॉफ्टवेयर पावरहाउस के रूप में स्थापित किया है। इससे आधुनिक बुनियादी ढाँचे, जैसे मेट्रो रेल नेटवर्क, राजमार्गों, हवाई अड्डों तथा छोटे शहर परियोजनाओं का विस्तार हुआ है। शहरी केंद्र उच्च शिक्षा और कौशल विकास के लिए भी वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण केंद्र बन गए हैं। बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे को ज्ञान और नवाचार के हब के रूप में व्यापक मान्यता प्राप्त है।

अपनी उपलब्धियों के बावजूद, भारतीय शहरीकरण में अभी भी कई कमियाँ विद्यमान हैं। इसकी एक बड़ी विफलता नियोजित शहरी विकास की कमी रही है; अनेक शहर बिना पर्याप्त बुनियादी ढाँचे के ही तेजी से विस्तारित हुए हैं। भारत की लगभग 35–45% शहरी आबादी झुग्गियों या अनौपचारिक बस्तियों में निवास करती है, विशेषकर मुंबई और दिल्ली जैसे महानगरों में। दिल्ली जैसे शहरों में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुँच गया है तथा जल की भी गंभीर कमी बनी रहती है, जबकि ठोस अपशिष्ट निस्तारण एक बड़ी चुनौती बना हुआ है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि भारत का शहरीकरण मॉडल सफलता और विफलता दोनों का मिश्रण है। यह आर्थिक विकास, बुनियादी ढाँचे और अवसरों में प्रगति को तो दर्शाता है, लेकिन साथ ही अनियोजित विकास, झुग्गियों के विस्तार, पर्यावरणीय दबाव और व्यापक सामाजिक–आर्थिक विषमताओं के रूप में गंभीर चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। ◆

कार्यालयीन गतिविधियाँ

कार्यालयीन गतिविधियाँ

कार्यालयीन गतिविधियाँ

कार्यालयीन गतिविधियाँ